



हर-हर महादेव

हमारा देश



MPHIN36951

कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए

वर्ष 01, अंक 02 मासिक पत्रिका

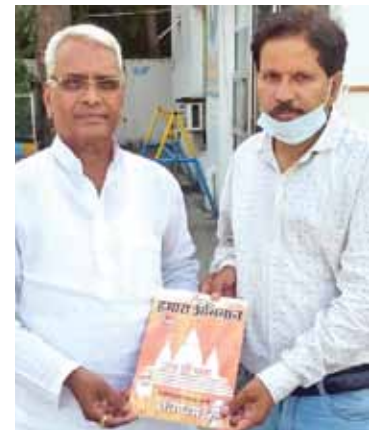
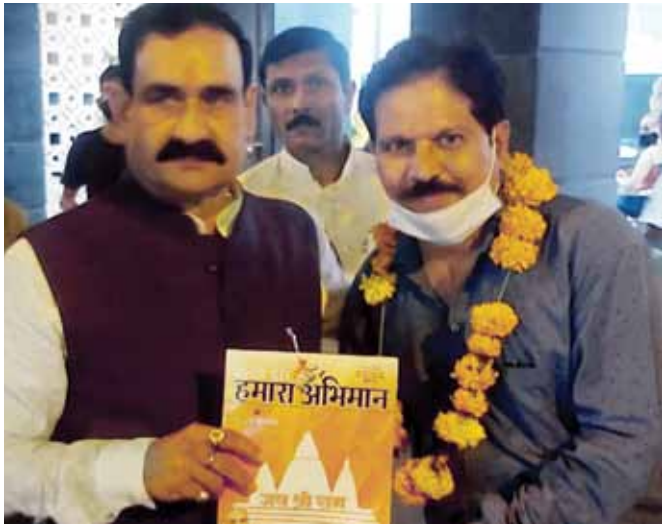
अगस्त 2021

हमारा अभिमान



तालिबान

...कैसा होगा
जीवन जीना



वरिष्ठ संरक्षक मंडल

- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य
- जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

संरक्षक मंडल

- श्री लोकेश चतुर्वेदी • श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन • श्री अरुण कांत शर्मा
- विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
- श्री मनोज भारद्वाज • अनिल जैन

संपादक

मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित : प्रमुख परामर्शदाता

विशेष संवाददाता

- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता
ग्वालियर हाईकोर्ट
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर हाई कोर्ट

ब्यूरो : अविनाश जाज पुरा (उज्जैन संभाग)

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)

सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

ब्यूरो राजस्थान

सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन- साक्षात्कार व्यवस्थापक और
विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

सलाहकार

- डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- डॉ. मुकेश चतुर्वेदी
- अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर

- सुनील • हरशूल • संजू

डिजाइन : मनोज पंवार

विवरणिका

संपादकीय	02
कवर स्टोरी	03,04
	05-06
शुभाशीष	08
मध्यप्रदेश	13
यात्रावृत्तांत	14
देश	15
अध्यात्म	17
इतिहास	18
सोशल मीडिया	22
नीमच टूरिज्म गाइड	26-27
कानून	34
खेल	35
करियर	36
लाइफ स्टाइल	37
स्वास्थ्य	38
धर्म	39-40
शिक्षा	42
मौसम विशेष	47
ग्लैमर	48



संपादकीय

एक वादा पाठकों से....

सनातन धर्म में चातुर्मास का विशेष महत्व है। यह समय चार महीनों तक रहता है जिसमें सावन, भादौ, आश्विन और कार्तिक का महीना आता है। यह काल निर्माण का काल है इस समय बीजारोपण के साथ ही नवांकुरण भी होता है। सृजन और सकारात्मक सोच भी इसी समय अपने पूरे उत्साह पर रहती है। ज़रूरी है इस समय अपनी ऊर्जा को संचित किया जाए। नई योजनाएं बनाकर उन पर अमल किया जाए। सौभाग्य से आपकी और हमारी मासिक पत्रिका हमारा देश हमारा अभिमान का आरंभ भी इसी सृजन काल में हुआ है। महादेव की अनुकंपा से आप सभी का पूर्ण आशीर्वाद और प्रतिसाद मिल रहा है। आपकी शुभेच्छाओं से इस मासिक पत्रिका की विषय वस्तु को पाठकों ने स्वीकार किया और कई सुझाव भी प्रेषित किए। हमारा प्रयास रहेगा कि पत्रिका में अधिक से अधिक सामग्री पाठकों की आशानुरूप ही हो। इस बार ना सिर्फ सामग्री बल्कि डिज़ाइन और पेजीनेशन की भी सराहना हुई।

हम वादा करते हैं कि रचनात्मक, साहसिक और निर्भीक पत्रकारिता के साथ साथ आमजन की समस्याओं को भी मैगज़ीन के माध्यम से सामने लाते रहेंगे।

आशा है आपका आशीर्वाद इसी तरह हमेशा मिलता रहेगा।

हर हर महादेव

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

तालिबान के तहत जीवन जीना कैसा ?



अफगानिस्तान के युद्ध से आहत लोगों के लिए, एक तरफ सुरक्षा और व्यवस्था लाने और दूसरी तरफ भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का तालिबान का वादा आकर्षक था। लेकिन इसकी एक बहुत ऊंची और कभी-कभी असहनीय कीमत भी चुकानी पड़ती थी। सार्वजनिक फांसी, लड़कियों के स्कूलों को बंद करने (दस वर्ष और उससे बड़ी उम्र के लिए), टेलीविजन पर प्रतिबंध लगाने और ऐतिहासिक बुद्ध प्रतिमाओं को उड़ाने जैसे कठोर दंड की शुरुआत। समूह का औचित्य अफगान परंपराओं के साथ इस्लाम की एक कट्टरपंथी सोच के सम्मिश्रण से उपजा है। तालिबान शासन (1999) के चरम के दौरान, एक भी लड़की को माध्यमिक विद्यालय में दाखिल नहीं किया गया था और पात्र (9,000) में से केवल 4% प्राथमिक विद्यालयों में थीं। अब लगभग 35 लाख लड़कियां स्कूलों में हैं।



2001 में 9/11 के आतंकवादी हमलों के लिए जिम्मेदार लोगों को सौंपने से तालिबान के इनकार के बाद देश पर अमेरिका के नेतृत्व में हमला किया गया, तालिबान के कई वरिष्ठ लोग पकड़े जाने से बचने के लिए भाग गए और कथित तौर पर पाकिस्तान के क्वेटा में शरण ली। बाद में इससे ह्यदकवेटा शूराहू का गठन हुआ, यह तालिबान की नेतृत्व परिषद है, जो अफगानिस्तान में विद्रोह का मार्गदर्शन करती है। आक्रमण के बाद का अल्पकालिक उत्साह समाप्त हो गया, जब तालिबान ने 2004 में फिर से संगठित होना शुरू किया और नई अफगान सरकार के खिलाफ एक खूनी विद्रोह शुरू किया, जिसमें कम से कम 170,000 लोगों की जान चली गई, जिसमें अब तक 51,613 नागरिक शामिल थे। 2021 में तालिबान के पास लगभग 75,000 लड़ाके हैं और इसकी विद्रोही मशीनरी विदेशी फंडिंग (सरकारों और निजी दाताओं से) के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर क्राधान, जबरन वसूली और अवैध दवा अर्थव्यवस्था पर चलती है।



तालिबान पीट रहा जीत का ढोल

अब तालिबान जीत का ढोल पीट रहा है और ऐसा लगता है कि उसने 2001 के अंत में निर्वासन के लिए मजबूर अपने शासन को फिर से लागू करने के लिए कमर कस ली है। अनुमानों के अनुसार समूह ने अफगानिस्तान के 400 जिलों में से आधे से अधिक पर कब्जा कर लिया है, जो उनके 85% इलाके पर कब्जा करने के दावे के विपरीत है। हालांकि, अमेरिका ने चेतावनी दी है कि वह सैन्य अधिग्रहण के परिणामस्वरूप काबुल में स्थापित होने वाले तालिबान शासन को मान्यता नहीं देगा। लेकिन सिर्फ इससे तालिबान को राजधानी पर कब्जा करने से रोकने की संभावना नहीं है, इसकी संभावना की परवाह किए बिना यदि समूह इसमें सफल हो जाता है, तो यह कोई नहीं जानता कि वह अपनी सरकार को चलाने के लिए धन कहां से लाएगा। दिलचस्प बात यह है कि तालिबान ने अपने आसपास के देशों ईरान, रूस और कुछ मध्य एशियाई देशों के साथ अपने संबंधों में सुधार किया है, जिन्होंने 1990 के दशक में कभी उनके शासन का विरोध किया था। समूह शायद अमेरिका और उसके सहयोगियों की सहायता के लिए एक क्षेत्रीय विकल्प खोजने का इरादा रखता है, साथ ही तालिबान विरोधी प्रतिरोध बल नॉर्थन अलायंस के पुनरुत्थान को रोकने का प्रयास करेगा, अन्यथा वह उन देशों से वित्तीय और सैन्य समर्थन लेने लगेगा।

तालिबान से डरते हैं अफगानी

एक बयान में, तालिबान ने हाल ही में कहा है कि वह 1990 के दशक के अंत में अपने कार्यों के बावजूद महिलाओं को काम करने और शिक्षित होने की सुविधा प्रदान करेगा। इस स्पष्ट बदलाव के बावजूद, तालिबान अभी भी इस्लाम की अपनी सख्त व्याख्याओं के आधार पर एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहा है, जिससे युवा, शहरी अफगान डरते हैं। उन्हें चिंता है कि लिंग के आधार पर अलगाव के कारण वे अब स्कूल या कार्यस्थल साझा नहीं कर सकते हैं, विपरीत लिंग के अपने दोस्तों के साथ भोजन करने बाहर नहीं जा सकते हैं या जो चाहें पहन नहीं सकते हैं।



महिलाओं का हक छीन रहा तालिबान

जब महिलाओं के अधिकारों, प्रेस की स्वतंत्रता, चुनाव और 2004 के संविधान (कम से कम, लिखित रूप में) में गारंटीकृत अन्य स्वतंत्रताओं की बात आती है, तो तालिबान ने अक्सर कहा है कि वह एक वास्तविक इस्लामी प्रणाली चाहता है जो अफगान परंपरा के साथ संरेखित हो, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि इसका वास्तव में क्या अर्थ है, और यह उनके पिछले नियम (1996-2001) से कितना भिन्न होगा।

तालिबान के खड़े होने का क्या है कारण ?



तालिबान के इस तरह फिर से उठ खड़े होने के पीछे कई कारण हैं, जिनमें हस्तक्षेप के बाद रणनीति की कमी, विदेशी सैन्य अभियान के प्रतिकूल प्रभाव, काबुल में एक भ्रष्ट और अक्षम सरकार, और विदेशी वित्तीय और सैन्य सहायता और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता पर बढ़ती निर्भरता शामिल है। अब अमेरिका ने तालिबान के साथ एक समझौता किया है और देश से पीछे हट रहा है। यह 2001 के बाद की नाजुक राजनीतिक व्यवस्था के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा है, जिसे बड़े पैमाने पर विदेशों से धन और संरक्षण मिल रहा है।

अफगानिस्तान के युद्ध का अंत नहीं...



तालिबान द्वारा सत्ता का सैन्य अधिग्रहण भी अफगानिस्तान में युद्ध के अंत को चिह्नित नहीं कर सकता है। बहु-जातीय और विविध समाजों में शांति और स्थिरता केवल सह-अस्तित्व, सर्वसम्मति और समावेश के माध्यम से सुनिश्चित की जा सकती है- प्रभुत्व और शून्य-सम राजनीति से नहीं। क्षेत्र के देशों के अलग-अलग हित तालिबान के खिलाफ बढ़ते स्थानीय असंतोष को बढ़ावा दे सकते हैं (जैसा कि 1990 के दशक के अंत में अनुभव किया गया था), जो बदले में, खूनी और विनाशकारी युद्ध की उम्र बढ़ा देगा।

आगे क्या है ? : अमेरिका-तालिबान सौदे ने एक राजनीतिक समझौते की संभावना के बारे में कुछ उम्मीद जगाई है, जो लंबे समय से चल रहे युद्ध को समाप्त कर सकता है और अफगानिस्तान को एक बार फिर से आतंकवादियों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह बनने की संभावना को कम कर सकता है। लेकिन ऐसा लगता है कि बिना शर्त अमेरिकी सेना की वापसी के बाद शांति प्रयासों ने अपनी गति खो दी है।

पाक और चीन को उल्टा पड़ सकता है तालिबान प्यार...

चीन और पाकिस्तान की अफगानिस्तान में तालिबान शासन को वैश्विक मान्यता दिलाने की संयुक्त रणनीति को लेकर विशेषज्ञों ने दोनों देशों को दीर्घकालिक नुकसान की चेतावनी दी है। 15 अगस्त को तालिबान के काबुल पर कब्जा करने के बाद चीन और पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में 20 साल के युद्ध के बाद इस मामले में दूसरे देशों के साथ संपर्क बढ़ाना शुरू कर दिया है। दूसरी ओर तालिबान की वापसी पर चिंता बनी हुई है, जिसके उदय से अलकायदा और इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकवादी समूहों फिर से सिर उठा सकते हैं। हांगकांग के ह्यासाउथ चाइना मॉनिंग पोस्ट के एक लेख में कुछ पाकिस्तानी विश्लेषकों के हवाले से कहा गया है कि पाकिस्तान अक्सर कहता रहा है कि अफगानिस्तान में उसका कोई पसंदीदा सहयोगी नहीं है, लेकिन इसके बावजूद पाकिस्तानी सरकार तालिबान की वापसी से स्पष्ट रूप से सहज नजर आ रही है।

काबुल पर तालिबान के कब्जे के कुछ ही घंटों के बाद, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने कहा कि अफगान लोगों ने पश्चिम की ह्यगुलामी की बेड़ियों को तोड़ दिया। ह्यार्टिकल में कहा गया है, ह्यपाकिस्तान विशेष रूप से चीन और रूस के करीब माने जाने वाले अंतरराष्ट्रीय समुदाय से तालिबान के साथ सामूहिक राजनयिक जुड़ाव स्थापित करने के लिए पैरवी कर रहा है। वह अफगानिस्तान में समावेशी प्रशासन सुनिश्चित करने, आतंकवादी हमलों को रोकने और महिलाओं को शिक्षा तथा रोजगार की अनुमति प्रदान के वादे पर तालिबान के लिये समर्थन जुटाने की कोशिश कर रहा है।

ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र और अमेरिका में पाकिस्तान की पूर्व राजदूत मलीहा लोधी ने कहा, ह्यपाकिस्तान को अपने पड़ोसी देश में शांति से सबसे अधिक लाभ और संघर्ष तथा अस्थिरता से सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को अपनी पश्चिमी सीमा पर स्थिरता से तभी फायदा होगा जब तालिबान प्रभावी ढंग से शासन करने, अन्य जातीय समूहों को समायोजित करने और स्थायी शांति स्थापित करने में सक्षम होगा। उन्होंने कहा, ह्यहइसके विपरीत, यदि वे ऐसा करने में असमर्थ रहे तो अफगानिस्तान को अनिश्चित तथा अस्थिर भविष्य का सामना करना पड़ सकता है, जो पाकिस्तान के हित में नहीं होगा।

क्यों मदद करना चाह रहा पाक ?

सिंगापुर में एस राजारलम स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (आरएसआईएस) के एक सहयोगी रिसर्च फेलो अब्दुल बासित ने कहा, पाकिस्तान तालिबान की मदद करके भारत को अफगानिस्तान से बाहर रखना चाहता था। जबकि तालिबान का मकसद पाकिस्तान में मिली पनाह का लाभ उठाकर अमेरिका को अफगानिस्तान से बाहर करना था। दो जुलाई को पाकिस्तान के राजनेताओं की एक गोपनीय संसदीय ब्रीफिंग में इंटर-सर्विसेज इंटेल्जेंस (आईएसआई) के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल



फैज हमीद ने तालिबान और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) समूह को ह्यएक ही सिक्के के पहलू बताया था।

रिश्ते में आ सकती है खटास

साथ ही, विश्लेषकों ने कहा कि पाकिस्तान और चीन दोनों को अमेरिका से एक मजबूत झटके का सामना करना पड़ सकता है जो अपने सैनिकों की वापसी के बाद स्वतंत्र रूप से चीन और क्षेत्र पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकता है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के विश्लेषक असफंदयार मीर ने कहा कि अमेरिका पाकिस्तान पर आतंकवाद और तालिबान पर लगाम लगाने के लिए दबाव डाल रहा है। ऐसे में दोनों देशों के रिश्ते तनावपूर्ण बने रहेंगे।

तो बना रहेगा तालिबान

बासित ने कहा, अगर तालिबान जिम्मेदारी से व्यवहार करता है और अपनी सरकार को संयम से चलाता है, तो अमेरिका-पाकिस्तान के संबंध में भले ही कोई सुधार न हो, लेकिन यह अपनी जगह बना रहेगा। अगर अफगानिस्तान में स्थिति बिगड़ती है तो अमेरिका-पाकिस्तान संबंध खराब हो जाएंगे। चीनी विश्लेषकों ने भी चीन के लिए इसी तरह की चेतावनी दी है। साउथ चाइना मॉनिंग पोस्ट के पूर्व प्रधान संपादक वांग जियांगवेई ने अखबार में अपने कॉलम में लिखा है कि अमेरिका का सबसे लंबा युद्ध एक विनाशकारी विफलता के साथ समाप्त हो गया है।

अमेरिकी हार का मजाक



चीनी आधिकारिक मीडिया रिपोर्ट और टिप्पणीकार जाहिर तौर पर अफगानिस्तान में अमेरिकी हार का मजाक उड़ाने में मशगूल नजर आ रहे हैं। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिये कि अफगानिस्तान वह देश है जिसे साम्राज्यों की कब्रगाह के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि चीन को ऐसा कोई कदम उठाने से बचना होगा जिससे उसे ब्रिटेन, सोवियत संघ और अब अमेरिका की तरह अफगानिस्तान में झटका झेलना पड़े। वांग ने कहा, इसमें कोई शक नहीं है कि अफगानिस्तान में अमेरिका की पराजय से चीन को अमेरिका की खिल्ली उड़ाने और अमेरिका के पतन की बात को फैलाने का मौका मिल गया है। लेकिन कुछ अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का मानना है कि इससे चीन को एक अधूरी रणनीतिक जीत मिली है।

अफगान क्रिकेट में इस तरह घुसे तालिबानी



अफगानिस्तान के पूरे देश पर तालिबानियों ने कब्जा कर लिया है। सोशल मीडिया पर अफगानिस्तान से आ रही फोटोज और वीडियो बेहद दर्दनाक हैं। वहां के हालात बेहद खराब हैं और अब तालिबान की नजरें अफगानिस्तान के क्रिकेट बोर्ड पर पड़ गई हैं।

अब अजिजुल्लाह फजली को अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) के चेयरमैन नियुक्त किए गए हैं। तालिबान के अफगानिस्तान पर कब्जा जमाने तथा राष्ट्रपति अशरफ गनी के देश छोड़कर जाने के बाद एसीबी में फजली की नियुक्ति बड़ा घटनाक्रम है। एसीबी ने कहा, ह्यपूर्व एसीबी चेयरमैन फजली को बोर्ड का दोबारा कार्यकारी चेयरमैन नियुक्त किया गया है। वह आगामी प्रतियोगिताओं के लिए एसीबी के नेतृत्व और कार्यवाही की देखरेख करेंगे।

फजली इससे पहले अतीफ मशाल के पद से इस्तीफा देने के बाद एसीबी के चेयरमैन बने थे। उनका कार्यकाल सितंबर 2018 से जुलाई 2019 तक रहा था। उनके पद से हटने के बाद फरहान यूसुफजई चेयरमैन बने थे। फजली अफगानिस्तान क्रिकेट के साथ करीब दो दशक से जुड़े हुए हैं। वह देश में खेल की स्थापना करने वाले खिलाड़ियों के शुरूआती समूह में शामिल थे। अपना खेल करियर समाप्त होने के बाद, उन्होंने एसीबी के उपाध्यक्ष और सलाहकार के रूप में भी काम किया।

तालिबान से अब क्रिकेट को खतरा

हाल ही में अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड के पूर्व मीडिया मैनेजर और पत्रकार इब्राहिम मोमंद ने ट्विटर पर एक फोटो शेयर की है। इस फोटो में बंदूकों से लैस तालिबानी एक हॉल में नजर आ रहे हैं। बता दें कि ये हॉल अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड का मुख्यालय ही है। इस फोटो को शेयर करते हुए खुद इब्राहिम मोमंद ने ही ये जानकारी लोगों को दी है। इस फोटो में एक और हैरानी वाली चीज देखने को मिली। दरअसल अफगानिस्तान के ही पूर्व क्रिकेटर अब्दुल्लाह मजारी भी तालिबानियों के साथ इस फोटो में मौजूद थे। 2010 में अफगानिस्तान के लिए डेब्यू करने वाले मजहारी ने 2 इंटरनेशनल वनडे मैच खेले हैं। इसके अलावा मजहारी ने 21 फर्स्ट क्लास, 16 लिस्ट ए और 13 टी-20 मुकामले भी खेले हैं।

तालिबान का यकीन नहीं किया जा सकता...

• प्रमोद जोशी

अफगानिस्तान में तालिबानी व्यवस्था पैर जमा चुकी है, वहीं देश के कई शहरों से प्रतिरोध की खबरें हैं। उधर अंतरिम व्यवस्था के लिए दोहा में बातचीत चल रही है, जिसमें तालिबान और पुरानी व्यवस्था से जुड़े नेता शामिल हैं। विश्व-व्यवस्था ने तालिबान-प्रशासन को मान्यता नहीं दी है। भारत ने कहा है कि जब ह्यालोकतांत्रिक-ब्लॉक कोई फैसला करेगा, तब हम भी निर्णय करेंगे। लोकतांत्रिक-ब्लॉक का अर्थ है अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और जापान। डर है कि कहीं अफगानिस्तान से नए शीतयुद्ध की शुरूआत न हो। तालिबान अपने चेहरे को सौम्य बनाने का प्रयास कर रहे हैं, पर उनका यकीन नहीं किया जा सकता। वे वैश्विक-मान्यता चाहते हैं, पर दुनिया को मानवाधिकार की चिंता है। अफगानिस्तान में पहले के मुकामले ज्यादा लड़कियां पढ़ने जा रही हैं, नौकरी कर रही हैं। वे डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक हैं। क्या तालिबान इन्हें बुर्का पहनाकर दोबारा घर में बैठाएंगे? इस सवाल का जवाब कोई नहीं जानता। ऐसा लगता है कि 20 साल से ज्यादा तक लड़ने के बाद अमेरिका ने उसी तालिबान को सत्ता सौंप दी, जिसके विरुद्ध उसने लड़ाई लड़ी थी। देश के आधुनिकीकरण की जो प्रक्रिया शुरू हुई थी, वह एक झटके में खत्म हो गई है। खासतौर से स्त्रियां, अल्पसंख्यक, मानवाधिकार कार्यकर्ता और नई दृष्टि से देखने वाले नौजवान असमंजस में हैं।

सेना क्यों हारी

पिछले बीस साल में अफगान सेना ने एयर-पावर, इंटेलिजेंस, लॉजिस्टिक्स, प्लानिंग और दूसरे महत्वपूर्ण मामलों में अमेरिकी समर्थन के सहारे काम करना सीखा था। अब उसी सेना की वापसी से वह बुरी तरह हतोत्साहित थी। राष्ट्रपति अशरफ गनी को उम्मीद थी कि बाइडेन कुछ भरोसा पैदा करेंगे, पर ऐसा नहीं हुआ। अमेरिकी सेना के साथ सहयोगी देशों के आठ हजार सैनिक और अठारह हजार ठेके के कर्मी भी चले गए, जिनसे अफगान सेना हवाई कार्यवाही और लॉजिस्टिक्स में मदद लेती थी। हाल के महीनों में अफगान सेना देश के दूर-दराज चौकियों तक खाद्य सामग्री और जरूरी चीजें भी नहीं पहुंचा पा रही थी। चूंकि कहानी साफ दिखाई पड़ रही थी, इसलिए उन्होंने निरुद्देश्य जान देने के बजाय हथियार डालने में ही भलाई समझी। बाइडेन ने अफगान सेना की जो संख्या बताई, वह भी सही नहीं थी। वांशिंगटन पोस्ट के अफगान पेपर्स प्रोजेक्ट में सेना और पुलिसकर्मियों की संख्या 3,52,000 दर्ज है, जबकि अफगान सरकार ने 2,54,000 की पुष्टि की। कमांडरों ने फर्जी



सैनिकों की भर्ती कर ली और उन सैनिकों के हिस्से का वेतन मिल-बांटकर खा लिया। इस भ्रष्टाचार को रोकने में अमेरिका ने दिलचस्पी नहीं दिखाई।

तालिबान की कमाई कैसे

तालिबान के पास इतनी ताकत कहां से आई? सबसे बड़ी भूमिका पाकिस्तान की है। तालिबान की कमाई का जरिया अफीम की खेती है। संयुक्त राष्ट्र के एक मॉनिटरिंग ग्रुप के अनुसार, जब तालिबान सत्ता में नहीं था, तब भी ग्रामीण इलाकों में अपने प्रभाव क्षेत्र में वह पोपी (अफीम) की खेती करवाता था, जिस पर उगाही से उसे अकेले 2020 में 46 करोड़ डॉलर की आमदनी हुई थी। दूसरी उगाहियों से भी काफी धनराशि मिलती है। अनुमान है डेढ़ अरब सालाना से ज्यादा की कमाई उसकी है।

इस्लामी अमीरात

हालांकि तालिबान ने 15 अगस्त को काबुल में प्रवेश कर लिया था, पर उन्होंने 19 अगस्त को अफगानिस्तान में ह्यइस्लामी अमीरात का स्थापना की घोषणा की। 19 अगस्त अफगानिस्तान का राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस है। 19 अगस्त, 1919 को एंग्लो-अफगान संधि के साथ अफगानिस्तान ब्रिटिश-दासता से मुक्त हुआ था। अंग्रेजों और अफगान सेनानियों के बीच तीसरे अफगान-युद्ध के बाद यह संधि हुई थी। अभी तक यह देश ह्यइस्लामी गणराज्य था, अब अमीरात हो गया। गणतंत्र का मतलब होता है, जहां राष्ट्राध्यक्ष जनता द्वारा चुना जाता है। अमीरात का मतलब है वह व्यवस्था, जिसमें स्वयंभू राष्ट्राध्यक्ष कुर्सी पर बैठते हैं। अब कोई कौंसिल बनेगी, जो शासन करेगी। कौन बनाएगा यह कौंसिल, कौन होंगे उसके सदस्य, क्या अफगानिस्तान की जनता से कोई पूछेगा कि क्या होना चाहिए? इन सवालों का जवाब है बंदूक।

कल्याण सिंह के जीवन के 5 अध्याय

• दीपक सिंह स्वरोची

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने दुनिया छोड़ दी लेकिन राजनीति में उनके नाम को हमेशा याद रखा जाएगा। कल्याण सिंह का जन्म 5 जनवरी 1935 को अलीगढ़ जिले की अतरौली तहसील के मढ़ौली गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ। वे बचपन में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गये थे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने अध्यापक की नौकरी शुरू कर दी। हालांकि उन्होंने इसके साथ ही राजनीति भी जारी रखी। आगे चलकर 1991 में वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। कल्याण सिंह का जीवन बेहद उठा-पटक वाला रहा। राजनीतिक जानकार बताते हैं कि कल्याण सिंह अपनी कुछ राजनीतिक गलतियों की वजह से बीजेपी के कप्तान बनते-बनते रह गए। अन्यथा वे अटल, आडवाणी के श्रेणी के नेता होते।

कल्याण सिंह पर जब भी बात होगी तो उनके जीवन के इन पांच अध्यायों की चर्चा जरूर होगी- बाबरी, वाजपेयी, कुसुम राय, यूपी सीएम और श्रीप्रकाश शुक्ल। सबसे पहले उनके राजनीतिक जीवन के शुरुआत और सीएम बनने की कहानी जानते हैं।

कल्याण सिंह साल 1967 में जनसंघ के टिकट पर अतरौली सीट से पहली बार विधानसभा पहुंचे और साल 1980 तक लगातार इसी सीट से जीतते रहे। आगे चलकर जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया और साल 1977 में उत्तर प्रदेश में जनता पार्टी की सरकार बनने पर उन्हें राज्य का स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया। हालांकि 1980 के विधानसभा चुनाव में कल्याण सिंह को हार का सामना करना पड़ा था। भारतीय जनता पार्टी का 1980 में जब गठन हुआ तो कल्याण सिंह को पार्टी का प्रदेश महामंत्री बनाया गया। अयोध्या आंदोलन के दौरान उन्होंने गिरफ्तारी देने के साथ ही कार्यकर्ताओं में नया जोश भरने का काम किया था। इस आंदोलन के दौरान ही उनकी छवि राम-भक्त की हो गई। वे यूपी ही नहीं पूरे देश में लोकप्रिय हो गए। इसीलिए 1991 में जब यूपी में पहली बार बीजेपी की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी तो मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को बनाया गया।

बाबरी विध्वंस की कहानी

पूरे देश में तब मंडल आयोग के समर्थन और विरोध की लहर थी। वहीं दूसरी ओर अयोध्या में राम-जन्मभूमि के लिए आंदोलन चल रहा था। मुलायम सिंह यादव के यूपी के मुख्यमंत्री रहते हुए 30 अक्टूबर, 1990 को अयोध्या में कारसेवकों पर गोली चलाई गई। इस गोलीबारी में कई कारसेवकों की मौत हो गई। बीजेपी ने तब कल्याण सिंह को मुकाबला करने के लिए आगे किया। कल्याण सिंह ने इसे मुद्दा बना दिया। जातिगत समीकरणों से भी पार्टी को फायदा मिला। नतीजा यह हुआ कि कल्याण सिंह 1991 में पूर्ण बहुमत की सरकार बना ली। कल्याण सिंह जैसे ही मुख्यमंत्री बने, वे अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों के साथ अयोध्या दौरे पर पहुंचे और वहीं पर राम मंदिर निर्माण की शपथ ली। कल्याण सिंह के कार्यकाल में ही वो दिन आया, जब 6 दिसंबर 1992 को कार सेवकों ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद ढहा दी। मस्जिद गिरते ही कल्याण सिंह ने नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए सीएम पद से इस्तीफा दे दिया। इस्तीफा देने के बाद मीडिया से बातचीत में कल्याण सिंह ने कहा कि बाबरी मस्जिद विध्वंस भावना की मर्जी थी। मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है। कोई दुख



नहीं है। कोई पछतावा नहीं है। ये सरकार राममंदिर के नाम पर बनी थी और उसका मकसद पूरा हुआ। ऐसे में सरकार राम मंदिर के नाम पर कुर्बान। राम मंदिर के लिए एक क्या सैकड़ों सत्ता को ठोकर मार सकता हूँ। केंद्र सरकार कभी भी मुझे गिरफ्तार करवा सकती है, क्योंकि मैं ही हूँ, जिसने अपनी पार्टी के बड़े उद्देश्य को पूरा किया है।

वाजपेयी के साथ तकरार

कल्याण सिंह और अटल बिहारी वाजपेयी, दोनों ही नेताओं ने जनसंघ से होते हुए बीजेपी का गठन किया और पार्टी को सत्ता तक पहुंचाने में भूमिका अदा की। हालांकि, इसी के साथ कल्याण सिंह और वाजपेयी के बीच राजनीतिक खींचतान और मनमुटाव जैसी खबरें भी आती रहीं। अटल बिहारी वाजपेयी और कल्याण सिंह ने एक ही दौर में सियासत में कदम रखा और एक ही राजनीतिक विचारधारा के साथ आगे बढ़े। कभी बनिया और ब्राह्मण पार्टी कही जाने वाली बीजेपी को पिछड़ों के बीच मजबूत करने में कल्याण सिंह ने अहम भूमिका अदा की। एक समय में उन्हें वाजपेयी के विकल्प के तौर पर भी देखा जाने लगा था, लेकिन कल्याण सिंह धैर्य से काम नहीं ले सके। कल्याण सिंह कहा करते थे कि मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल थी, जब मैंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने की बात को स्वीकार कर लिया। अगर मैं इस्तीफे के लिए तैयार नहीं होता तो अटल बिहारी वाजपेयी मुझे हटा नहीं सकते थे। इसी दर्द में बाद में कल्याण सिंह ने बीजेपी को भी अलविदा कह दिया था। कल्याण सिंह और अटल बिहारी वाजपेयी के बीच सियासी रस्साकशी की बुनियाद 1997 के समय पड़ी। 1996 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी, लेकिन प्रदेश में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला था। इसके चलते यूपी में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया, लेकिन चार महीने के बाद 1997 में बसपा और बीजेपी के बीच सरकार बनाने के लिए 6-6 महीने के मुख्यमंत्री का फॉर्मूला तय हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी 1998 में प्रधानमंत्री बने, लेकिन कल्याण सिंह के साथ पहले जैसे रिश्ते नहीं रहे। 13 महीने बाद अटलजी की सरकार एक वोट से गिर गई थी। कांशीराम ने वाजपेयी से सदन में समर्थन देने का वादा किया था, लेकिन कल्याण सिंह के प्रकरण के चलते बसपा सदन से वॉकआउट कर गई। इसके बाद जब 1999 में मध्यवर्धि लोकसभा चुनाव हो रहे थे तब कुछ ऐसे बयान सामने आए जिससे दोनों

नेताओं के बीच की दूरी का अंदाजा लगाया गया। 1999 के लोकसभा चुनाव के दौरान यूपी के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह थे और लखनऊ में प्रेस कॉन्फ्रेंस में उनसे एक सवाल हुआ था कि आपको पक्का भरोसा है कि अटल बिहारी वाजपेयी दोबारा प्रधानमंत्री बन जाएंगे? इस पर कल्याण सिंह ने कहा था कि मैं भी चाहता हूँ कि वे प्रधानमंत्री बनें, लेकिन पीएम बनने के लिए पहले सांसद भी बनाने पड़ते हैं। कल्याण सिंह ने अटल बिहारी वाजपेयी को साजिशकर्ता और ब्राह्मणवादी मानसिकता से ग्रस्त व्यक्ति तक बता दिया था। इतना ही नहीं, यह भी कहा कि अटल बिहारी को एक पिछड़े वर्ग से आने वाला व्यक्ति मुख्यमंत्री के रूप में सहन नहीं हो रहा था। अटलजी ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए राम मंदिर मुद्दे को तिलांजलि दे दी है। वे बीजेपी को खत्म करने को उतारू हैं। बीजेपी के तत्कालीन अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे ने कल्याण सिंह को छह साल के लिए बीजेपी से बाहर कर दिया। इसके बाद कल्याण सिंह ने अपने समर्थकों के साथ मिलकर राष्ट्रीय क्रांति पार्टी का गठन किया। 2002 के विधानसभा चुनाव चार सीटें आईं। इसके बाद मुलायम सिंह की सरकार में शामिल हो गए, लेकिन 2004 में वाजपेयी उन्हें दोबारा से बीजेपी में ले आए। 2007 में बीजेपी ने उन्हें सीएम का चेहरा बनाया, लेकिन अब न तो पहले की तरह उनका सियासी असर रहा और न ही तेवर। ऐसे में बीजेपी को करारी मात खानी पड़ी। इसके बाद कल्याण सिंह का बीजेपी से मोहभंग हो गया और 2009 में पार्टी छोड़ दी। बीजेपी छोड़ने के बाद कल्याण सिंह ने सपा के साथ हाथ मिला लिया। मुलायम के समर्थन से कल्याण सिंह तो जीत गए, लेकिन सपा को करारी झेलनी पड़ी। इसके बाद 2014 में बीजेपी में वापसी की और कसम खाई कि जिंदगी की आखिरी सांस तक अब बीजेपी का रहूंगा। मोदी सरकार के बनने के बाद उन्हें राजस्थान का राज्यपाल बनाया गया था।

कुसुम राय से दगा

बताया जाता है कि कल्याण सिंह के राजनीतिक ढलान की वजह उन्हीं की पार्टी की एक नेता कुसुम राय थीं जो समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय क्रांति पार्टी की मिलीजुली सरकार में कैबिनेट मंत्री थीं। दरअसल एनडीए के दम पर अटल बिहारी वाजपेयी 10 अक्टूबर 1999 को प्रधानमंत्री बनने में कामयाब रहे। इसी के बाद बीजेपी में कल्याण सिंह को हटाने के लिए मांग उठने लगी। यूपी में वाजपेयी के करीबी नेता खुलकर कल्याण सिंह के खिलाफ एकजुट हो गए। कल्याण सिंह और वाजपेयी के बीच कड़वाहट जगजाहिर हो गई थी। कल्याण सिंह को लग रहा था कि उन्हें पद से हटाने का मोर्चा जिन नेताओं ने खोल रखा है, उन्हें वाजपेयी शह दे रहे हैं। कल्याण सिंह के खिलाफ बीजेपी नेताओं के एकजुट होने की वजह कुसुम राय भी थीं। लखनऊ से पार्षद रहते हुए कुसुम राय कल्याण सिंह की सरकार में काफी पावरफुल मानी जाती थीं और तमाम सियासी फैसले में दखल दिया करती थीं।

शुक्ल ने हत्या की ली थी सुपारी

श्री प्रकाश शुक्ल उस जमाने में यूपी और बिहार में आतंक का पर्याय बन चुका था। कहा जाता है कि उसने तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को मारने की सुपारी ली थी। 25 साल के इस युवा बदमाश से निपटने के लिए एसटीएफ गठन करना पड़ा था। सितंबर 1998 को एसटीएफ ने इस डॉन को मुठभेड़ में मार गिराया।

सशक्त और सुंदर आरंभ के लिए बधाई



हमारा देश हमारा अभिमान का पहला अंक देखते ही बनता है। विषय वस्तु के चुनाव से लेकर सजावट तक गंभीरता से विचार किया गया है। वास्तव में किसी भी पत्रिका की यही दो बातें महत्वपूर्ण होती हैं। मनोज चतुर्वेदी ने संपादक के रूप में एक अच्छी पत्रिका का आरंभ किया है। पत्रकारिता के जिस मापदण्ड पर उन्हें खरा उतरना है वे हैं निष्पक्ष और निर्भीक निर्णय। पहले अंक में ये मापदण्ड दिखाई दिए हैं। आशा है ये सोच आगे भी जारी रहेगी। एक और बात जो ध्यान रखने योग्य है वह है मनन प्रक्रिया की निरंतरता। हर आने वाला अंक पिछले से बेहतर और ताजा हो और ज्यादा से ज्यादा समसामयिक सामग्री का समावेश हो यह बेहद जरूरी है। हालांकि हमारा देश हमारा अभिमान की सशक्त टीम इसे बखूबी अंजाम देने में सक्षम है, इसका पूरा विश्वास है मुझे।

शुभाशीष
डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र

राजेन्द कुमार मौर्य
नायब तहसीलदार व
मिहौना नपा प्रशासक

बाबूलाल कुशवाह
सीएमओ नगर पालिका
परिषद मिहौना

मिहौना नगरपालिका परिषद की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हादिक शुभकामनाएं**

मिहौना नगरपालिका परिषद नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी। वैक्सीन अवश्य लगावाएं।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र

नवनीत भारद्वाज
तहसीलदार व आलमपुर
नपा परिषद प्रशासक

बाबूलाल कुशवाह
सीएमओ नगर पालिका
परिषद आलमपुर

आलमपुर नगरपालिका परिषद की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हादिक शुभकामनाएं**

आलमपुर नगरपालिका परिषद नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी। वैक्सीन अवश्य लगावाएं।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

देश प्रेम के भाव से ओतप्रोत रहे पत्रिका

पत्रकारिता को तीक्ष्ण और प्रतिक्रियात्मक साधन के रूप में ही जाना जाता है लेकिन उसमें सौम्यता और विनम्रता भी शामिल हो जाए तो सोने पे सुहागा है। मनोज चतुर्वेदी जी के स्वभाव के साथ ही उनकी पत्रिका में भी ये भाव दिखाई दे रहे हैं। अपने माता-पिता से आशीर्वाद लेते चित्र से बाद ही उन्होंने विषय-वस्तु की शुरुवात की है ये अच्छी बात है। इन दिनों पत्रकारिता में आदर्श और संस्कार की नितांत आवश्यकता महसूस की जा रही है। हमारा देश हमारा अभिमान की टीम ने इस कमी की पूर्ति की है। देश प्रेम से सम्बन्धित विषय वस्तु भी निरंतर रहे तो पत्रिका का नाम भी सार्थक होगा। मासिक पत्रिका हमारा देश हमारा अभिमान के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।



निविता गुप्ता

कमांडेंट 14 व्ही वाहनी,
एसएएफ, ग्वालियर

एक अक्टूबर से बदल जाएगी आपकी सैलरी और काम करने का समय?

कें द्र सरकार जल्द ही चारों लेबर कोड का लागू कर सकती है। इससे आपकी सैलरी पर भी प्रभाव पड़ सकता है। अब तक की जानकारी के मुताबिक चारों लेबर कोड एक बार में ही लागू किए जाएंगे और यह फैसला 1 अक्टूबर तक किया जा सकता है। इन नियमों के लागू होने के बाद टेक होम सैलरी कम हो जाएगी और प्रोविडेंट फंड की लायबिलिटी बढ़ जाएगी। जब ये कोड लागू हो जाएंगे तो बेसिक पे और प्रोविडेंट फंड की गणना करने के तरीके बदल जाएंगे। बता दें कि मंत्रालय ने चारों कोड के तहत नियम तय कर लिए थे लेकिन इन्हें लागू नहीं किया जा सका क्योंकि श्रम का मामला समवर्ती सूची में आता है।

अगर यह नियम लागू होता है तो ऑफिस का टाइम भी बढ़ जाएगा क्योंकि नए श्रम कानून में अधिकतम 12 घंटे काम करने का प्रस्ताव रखा गया है। ओएसएच कोड के प्रस्तावित नियमों के मुताबिक 15 से 30 मिनट तक के अतिरिक्त काम को गिनकर इसे ओवरटाइम में शामिल करने का प्रस्ताव है। अगर अभी की बात करें तो 30 मिनट से कम के काम को ओवरटाइम में नहीं गिना जाता है। इन प्रस्तावित नियमों में यह भी है कि किसी भी कर्मचारी से 5 घंटे से ज्यादा लगातार काम न लिया जाए। हर पांच घंटे में आधे घंटे का रेस्ट अनिवार्य है।



कैसे पड़ेगा सैलरी पर असर?

नए प्रस्तावित नियमों के मुताबिक मूल वेतन कुल वेतना का 50 फीसदी या ज्यादा होना चाहिए। ऐसे में वेतन की पूरी संरचना बदल जाएगी। अब तक वेतन में भत्तों का हिस्सा अधिक हुआ करता था। मूल वेतन बढ़ने के बाद पीएफ भी बढ़ जाएगा। इसके बाद टेक होम सैलरी कम हो जाएगी।

बढ़ जाएगी रिटायरमेंट की राशि

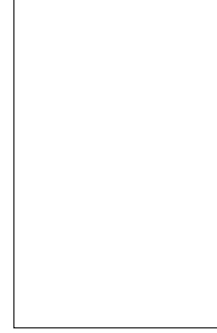
वेतन की संरचना बढ़ने के बाद ग्रेच्युटी और पीएफ में योगदान बढ़ जाएगा। जब पीएफ बढ़ेगा तो कंपनियों को भी अपने कर्मचारियों के पीएफ में ज्यादा योगदान देना होगा। इसके बाद लोगों को रिटायरमेंट के बाद मिलने वाली राशि भी बढ़ जाएगी।



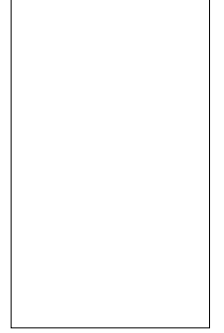
मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र



अभय बर्मा
अशोक नगर
नपा प्रशासक



पी.के. सिंह
सीएमओ नगर
पालिका अशोक नगर

नगर पालिका अशोकनगर की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हार्दिक शुभकामनाएं**

अशोक नगर पालिका के नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बों में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



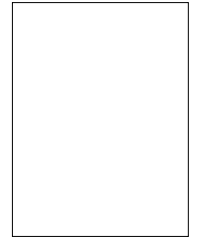
मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र



ए. आर. प्रजापति
प्रशासक नगर
पालिका लहार



रमेश सगर
सीएमओ नगर
पालिका लहार

नगर पालिका लहार की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हार्दिक शुभकामनाएं**

लहार नगर पालिका के नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बों में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



प्रशासक
बृज मोहन आर्य



कौशलेन्द्र विक्रम सिंह कलेक्टर, ग्वालियर



चंद्रकांत शर्मा
सीएमओ नगर परिषद पिछौर

नगर पालिका पिछौर की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हार्दिक शुभकामनाएं**



1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



न्यू आनंद मेडिकल स्टोर जवाहर गंज डबरा की ओर से 15 अगस्त के पावन पर्व की बहुत बहुत **बहुत बहुत शुभकामनाएं**



प्रो. आनन्द श्रीवास्तव

1 छुट्टी की राजनीति क्या आदिवासी वोटों का रुख बदल सकती है.. ?



• दिनेश गुप्ता

मध्यप्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था दो दल आधारित है। वोटर कांग्रेस से नाराज होता है तो भाजपा के पाले में चल जाता है, लेकिन जहां बहुजन समाज पार्टी या गोंडवाना गणतंत्र पार्टी का कोई उम्मीदवार होता है तो वोटों का विभाजन हो जाता है। कांग्रेस ने विधानसभा के पिछले आम चुनाव में आदिवासी वोटों का विभाजन काफी हद तक रोक लिया था। फलस्वरूप पंद्रह साल बाद कांग्रेस को मध्य प्रदेश की सत्ता वापस मिली। राज्य में आदिवासियों के लिए कुल 47 विधानसभा सीटें आरक्षित हैं। लगभग चालीस सामान्य सीटें ऐसी हैं भी हैं, जहां आदिवासी वोटर हार-जीत में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रभाव क्षेत्र वाले शिवपुरी जिले में सहरिया आदिवासी हैं। लगभग चार साल पहले कोलारस विधानसभा के उपचुनाव में सहरिया आदिवासियों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही थी। चुनाव जीतने के लिए सरकार ने आदिवासियों को एक हजार रुपए की नगद राशि दिए जाने का दांव चला। इसके बाद भी सीट कांग्रेस ने जीती थी। श्योपुर जिले में भी आदिवासी वोटर अहम हैं। राजनीतिक दलों की चिंता आरक्षित सीटों से ज्यादा चिंता उन सामान्य सीटों पर आदिवासियों की रहती है, जहां वे निर्णायक हैं। भारतीय जनता पार्टी लगातार इन वोटरों को अपने पक्ष में करने के लिए कार्यक्रम चलाती रहती है।

अवकाश न होने का साइड इफेक्ट

कमलनाथ ने राज्य का मुख्यमंत्री बनने के बाद पहली बार विश्व आदिवासी दिवस नौ अगस्त पर सार्वजनिक अवकाश शुरू किया। पिछले साल भी नौ अगस्त को सार्वजनिक अवकाश था, लेकिन इस साल सार्वजनिक अवकाश की सूची से विश्व आदिवासी दिवस को हटा दिया गया। कमलनाथ के प्रभाव वाले छिंदवाड़ा में भी आदिवासी वोटर निर्णायक माने जाते हैं। लोकसभा के

मध्यप्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था दो दल आधारित है। वोटर कांग्रेस से नाराज होता है तो भाजपा के पाले में चल जाता है, लेकिन कांग्रेस ने विश्व आदिवासी दिवस की सरकारी छुट्टी समाप्त किए जाने को मुद्दा बनाकर भाजपा को अलग रणनीति अपनाने के लिए मजबूर कर दिया। जबकि मध्यप्रदेश की सत्ता पर काबिज भाजपा सरकार ने भी बड़ा दांव खेल दिया है।

पिछले चुनाव में भाजपा ने कमलनाथ के पुत्र नकुलनाथ के खिलाफ आदिवासी कार्ड का उपयोग किया था। नकुलनाथ की जीत दस हजार वोटों से ही हो पाई। शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने जब नौ अगस्त के अवकाश को सूची से हटाया तो कमलनाथ ने इसे मुद्दा बनाने में देर नहीं की। छिंदवाड़ा में आदिवासी विधायकों की मांग पर कलेक्टर ने स्थानीय अवकाश घोषित किया और फिर निरस्त कर दिया। जाहिर है कि अवकाश निरस्त करने को लेकर कलेक्टर पर राजनीतिक दबाव होगा। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने इस पूरे घटनाक्रम को आदिवासियों के सम्मान से जोड़ते हुए आरोप लगाया कि भाजपा आदिवासियों का अपमान कर रही है। जवाब में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस

पर घटिया राजनीति करने का आरोप लगाते हुए घोषणा की कि पंद्रह नवंबर को आदिवासी नेता बिरसा मुंडा की जयंती पर सरकारी अवकाश रहेगा और आयोजन भी होगा।

अवकाश की राजनीति की जरूरत?

विश्व आदिवासी दिवस के अवकाश को लेकर राजनीतिक दलों के भीतर जिस तरह की समर्थन और विरोध की हलचल रही। उससे यह नतीजा तो निकाला ही जा सकता है कि किसी समुदाय विशेष के वोटों का धुवीकरण सरकारी अवकाश से भी हो सकता है? राज्य में आने वाले कुछ महीनों में तीन विधानसभा और एक लोकसभा सीट पर उपचुनाव होना है।

खंडवा लोस सीट पर जयस का प्रभाव

खंडवा की लोकसभा सीट पर उपचुनाव होना है। यहां आदिवासी वोटरों की संख्या काफी है। आदिवासी संगठन जय आदिवासी युवा शक्ति संगठन (जयस) भी यहां सक्रिय है। कांग्रेस की चिंता का विषय जयस का बढ़ता प्रभाव है। विधानसभा के आम चुनाव में कांग्रेस ने जयस नेता डॉ. हीरालाल अलावा को अपने पक्ष में कर लिया था। अब जयस नेताओं की मांग राजनीतिक हिस्सेदारी को लेकर बढ़ती जा रही है। जयस यदि अपना उम्मीदवार उतारती है तो कांग्रेस के लिए जीत की संभावनाएं कम हो जाती हैं। भारतीय जनता भी एक अवकाश के लिए आदिवासी वोटों को नाराज कर अपने खाते ही सीट नहीं गंवाना चाहती। यही कारण है कि मुख्यमंत्री चौहान ने बिरसा मुंडा की जयंती पर सार्वजनिक अवकाश देने की घोषणा की है। जिन तीन सीटों पर विधानसभा के उपचुनाव हैं उनमें झाबुआ जिले की जोबट सीट भी है। इस सीट से कलावती भूरिया कांग्रेस की टिकट पर चुनाव जीती थीं, लेकिन कोरोना से उनका निधन हो गया था।

अजंता... एक अद्भुत कलात्मक सपने का साकार होना...

अजंता चित्रकला, वास्तुकला और शिल्पकला का बेजोड़ उदाहरण लिए हमारे समक्ष बरसों बरस से मौजूद है। अजंता को देखने समझने का सपना अमूमन हर कलाकार देखता है। मेरे भी कुछ छोटे बड़े सपनों में एक सपना रहा है अजंता। साल दर साल बीतते रहे और आज मेरा यह सपना हकीकत में बदलने को उत्सुक है। अपने परिवार के साथ मैं इंदौर से इस सपने की डोर थामे निकल



• भारतीय दीक्षित
चित्रकार, किस्सागो।

पड़ी अपने गंतव्य की ओर...रास्ते भर प्रकृति रचित कृतियों को निहारते हुए सोचती रही कि कितनी शिद्दत से ये कृतियां रची गई हैं। प्रत्येक कृति हर दूसरी कृति से सर्वथा भिन्न। पर्वत, नदियां, खेत, पक्षी और पेड़ों की प्रत्येक शाखा और उनकी कॉपलें, सब कुछ एक दूसरे अलग और अद्भुत।

पहले हमने निश्चित किया था कि औरंगाबाद रुक कर अजंता जाया जाए पर रास्ते में सोचा कि क्यों न अजंता में एक रात रुकें...सो बुरहानपुर से अजंता की ओर मुड़ गए...और यह फैसला सही मायनों में सही साबित हुआ। अजंता पहुँचने का उत्साह अपने चरम पर था इसलिए सफर की थकान भी मालूम न चली। अजंता पहुँचने पर वहाँ की गर्मीमानो प्रथम वर्षा की बूंदों में तब्दील हो गई। अजंता की शांति मन के अंदर तह तक भेद गई। आज भी शहरी आबो हवा से दूर सुकून पहुँचाती हुई। अजंता में महाराष्ट्र का ठेठ मराठी स्वाद वाला भोजन भी अनूठा था। चूल्हे की आंच पर बनी बाजरे की भाखरी और बैंगन की भाजी में पंच पकवान से भी ज्यादा स्वाद मिला। चूल्हे की आग की महक से सराबोर वैसा अनूठा स्वाद शायद ही कभी मेरी जुबां ने चखा हो।

रात्रि में जब आसमान की तरफ नजर गई तो बरबस ही बचपन की वो पहली याद आ गई एक थाल मोती से भरा सबके सिर पर औंधा धरा। आसमान में इतने सारे मोती रूपी तारे देख सोचने लगी कि हम शहर में ये मोती कम ही देख पाते हैं, प्रदूषण की काली परछाईं इन मोती की चमक को धुंधला कर गई है। रात में झींगुर की आवाज ऐसी लग रही थी मानो कालजयी कृतियों का सांध्य गीत हो। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे अजंता की ये रात पूर्वाभ्यास थी...मेरे चेतन मन को स्थिर करने के लिए, संयमित करने के लिए। सुबह सोच रही थी कि कृतियों की गुफा सामने ही दिखाई देगी और ये सोच आँखों में चमक आ गई पर भूल गई थी कि ऐसी कालजयी रचना शांति, साधना और गहन मनन के बिना संभव नहीं। सो हम चल पड़े अजंता की पर्वत श्रंखला की ओर जो काफी ऊपर जाकर दिखाई पड़ी। टेड़े मेढे रास्ते और रास्ते के साथ ही बहती बधोरा या वगरना नदी, हालाँकि गर्मी से नदी सूख चुकी थी पर पत्थरों पर पड़े पानी के निशान अब भी उसकी नमी की कहानी बया कर रहे थे, अजंता की गुफा तक उड़ कर पहुँच जाना चाहती थी। पल पल भारी हो रहा था। जब वहाँ पहुँची तो सबसे पहले आसपास की प्रकृति की अनुपम रचना को निहार कर सृजनकारों को नमन किया कि जो कैनवास का चयन उन्होंने किया वह अतुलनीय था।

ऊँचे ऊँचे पहाड़ों को काट कर मध्य में बनाई गई घोड़े के



नाल के आकार की गुफा की संरचना। गुफा का निर्माणकाल 200 ई एवं 450-600 ई के आसपास माना गया है। मैं सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुए उस काल में पहुँच जाना चाहती थी जब इसकी शुरुआत हुई होगी...हम तो सधे हुए समतल सतह पर पैर रख चढ़ रहे थे पर शायद यहाँ तक चढ़ना तब बड़ा जटिल रहा होगा। कहा गया है कि यहाँ प्रत्येक गुफा से सीढ़ी हुआ करती थी जो बहती हुई बागोरा नदी तक जाती थी। यह भी सन्देह है कि शायद यहाँ बौद्ध महाविद्यालयीन मठ हो जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी रहा करते हों। हम जैसे ही प्रथम गुफा द्वार पर पहुँचे मुझे अपनी ही आँखों पर यक्रीन न करने का मन हुआ। हे ईश्वर अंदर दाखिल होने के पूर्व इस अद्भुत अचंभे को अपनी आँखों में सहेज कर ले जाऊ ऐसी शक्ति दे। मैंने मन ही मन बौद्ध भिक्षुओं को प्रणाम किया। आँखों की फैली पुतलियाँ मानो स्थिर हो गईं... अवाक, मौन के साथ जब मैंने अंदर प्रवेश किया तब...कुछ मिनट के लिए मेरे पास न शब्द थे न चेतना। मेरे सामने थी अल्पसाधन और अथक साधना से बनी गुफानुमाकैनवास पर बची खुची कालजयी, अप्रतिम रचना। मैं स्तब्ध थी समझ नहीं आ रहा था के कहीं से देखना शुरू करूँ। अन्य सभी गुफा के मुक्काबले

सबसे ज्यादा चित्रों वाली गुफाओं में से एक थी ये गुफा नो १। क्या देखूँ, और क्या नहीं इसी उहापोह में थी कि गाइड ने एक 3D रचना की ओर ध्यान दिलाया जो वाकई अचंभित करने वाला था। बुद्ध के जीवन पर आधारित कहानियाँ और जातक कथाओं का इतनी सफाई से चित्रण कि पूरी जातक कथा चित्र देख कर समझ में आ सकेगी। पूरे गुफा नुमी कैनवास पर कोई खाली स्थान न था, चाहे वो छत होया दीवार, या दीवार का बाहरी हिस्सा। शिद्दत से रची गई लगभग 900 वर्षों की साधना। रंगों में सिंदूरी, विभिन्न भूरे, पीले, सफेद, काला, गहरा हरा रंग जो स्थानीय पत्थर से बनाया गया बाकि के रंग फूलो या वनस्पतियों से बने हुए, प्रमुख हैं। एक रंग अद्भुत नीला रंग लेपुसलाजुली जो संभवतः आयात किया गया हो इन सभी रंगों का अद्भुत संयोजन।

मन में चल रहा था कि पहली रचना कहीं से शुरू की गई होगी लालायित थी सब कुछ जानने को और पिछले

वर्षों में जाने को...प्रत्येक रेखा बड़ी सटीक, सधी हुई और संतुलित। जिसमें पहले रेखांकन कर रंग भरा गया होगा। सीमित रंगों और सधी हुई रेखाओं के द्वारा रचा गया अनूठा और अचंभित कर देने वाला चित्र विन्यास...जो कि दुबारा न हो पायेगा। बौद्ध भिक्षु बुद्ध की साधना में रत रहते हुए बुद्ध के जीवन पर वर्षों वर्ष चित्र रचते गए। पर चित्र बनने के पहले खुरदुरी गुफा को कैनवास समान कैसे लाया गया होगा, यह भी हैरत भरा है कि गुफा को पहले काटा जाना, उसमें आधार स्तम्भ बनाया जाना, गुफा को आकार देना, और बुद्ध साधना में लीन रहते हुए यह सब करना, सोच सोच कर दिमाग सुन्न होने लगा। गुफा की पथरीली खुरदुरी सतह को चित्रों के लिए समतल सपाट सतह देने के लिए करीब एक इंच मोती पलस्तर रूपी तह बनाई गई। जिसे चूना, खड़िया, धान की भूसी, अलसी का पानी एवम् अन्य सामग्री मिला कर पलस्तर लगाया गया और यह तह गुफा की प्रत्येक दीवार और छत पर मौजूद थी। तब जाकर एक समतल स्थान मिला जिस पर चित्र रचे गए। रौशनी का कहीं पता नहीं था, सूर्य की रौशनी को गुफा के प्रत्येक कोनों तक कैसे लाया गया ये भी दिलचस्प है। ऐसा कहा गया है कि गुफा की जमीन पर पानी भरा गया होगा और प्रकाश का परावर्तन के माध्यम से सूर्य के प्रकाश से रौशनी की गई होगी। यानी विज्ञान तब भी अपने पूरे आकार में मौजूद था। हैरत होती है यह देख कर कि 900 वर्षों तक कौन बौद्ध भिक्षु अल्प साधन में ध्यान और साधना, प्रार्थना के अतिरिक्त चित्रकारी और शिल्प रूप में आराधना में रत रहे। वे सभी इतने पारंगत थे के सधी हुई सटीक रेखाओं द्वारा बुद्ध का पूरा जीवन काल उनकी जातक कथाओं को बनाते चले गए। आश्चर्य का विषय है पर सत्यता का प्रामाण्य मेरी आँखों के सामने था।

अजंता की गुफाओं में कुछ गुफा चैत्य मंदिर और कुछ विहार मठ हैं। गुफा के कई चित्र अब भी वैसे ही हैं, जैसे बनाये गए होंगे। मैं जब बोधिसत्व पद्मा पाणि और बोधिसत्व वज्रपाणि के सम्मुख खड़ी हुई तो हतप्रभ थी देख कर की बुद्ध के शरीर की रचना बड़ी सुंदरता से प्रवाहपूर्ण रेखा द्वारा की गई। उनके मुख मंडल के कोमल भाव स्पष्ट देखे जा सकते थे। जैसे मोती की माला का गुंथे हुए गुच्छों में दिखाई देना अद्भुत था।

निजी स्कूलों पर सुप्रीम कोर्ट का सख्त रुख

मध्य प्रदेश के स्कूलों में मनमानी फीस वसूली को लेकर सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) ने बड़ा आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि स्कूलों को पैरेंट्स को बताना होगा कि किस मद में कितनी फीस ले रहे हैं। पैरेंट्स की शिकायतों पर जिला शिक्षा समिति को चार हफ्तों में फैसला करना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश जागृत पालक संघ की याचिका पर दिया।



जागृत पालक संघ मध्यप्रदेश की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पैरेंट्स को फीस की जानकारी देने के बाद ये जानकारी स्कूलों से जिला शिक्षा समिति को लेनी होगी। इसके बाद प्रदेश के स्कूल शिक्षा विभाग को इस जानकारी को दो हफ्ते में अपनी वेबसाइट पर अपलोड करना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा है कि अगर किसी पालक को स्कूल से कोई शिकायत है तो वह जिला शिक्षा समिति के पास अपनी शिकायत दर्ज करा सकेगा और समिति को चार सप्ताह में इसका निराकरण भी करना होगा। जागृत पालक संघ के सचिन माहेश्वरी, दीपक शर्मा, विशाल प्रेमी, स्व। देव खुबानी, प्रतीक तागड, धीरज हसीजा की तरफ से एडवोकेट अभिनव मल्होत्रा, मयंक क्षीरसागर व चंचल गुप्ता ने सुप्रीम कोर्ट में पैरवी की थी।

इस वजह से सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मामला
गौरतलब है कि टयुशन फीस के नाम पर स्कूल संचालकों द्वारा पूरी फीस वसूले जाने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा था। इस मामले में इंदौर के जागृत पालक संघ के अध्यक्ष एडवोकेट चंचल गुप्ता और सचिव सचिन माहेश्वरी व अन्य सदस्य सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने ये फैसला सुनाया है। पहले पैरेंट्स की शिकायत पर जिला प्रशासन ध्यान ही नहीं देता था। अधिकारी अधिकार क्षेत्र नहीं होने का कहकर मामला टाल देते थे। लेकिन, अब ऐसा नहीं हो सकेगा। 2020 में मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने आदेश दिए थे कि निजी स्कूल केवल टयुशन फीस ले सकेंगे। अधिकांश स्कूल टयुशन फीस की आड़ में पूरी फीस ले रहे थे।

पैरेंट्स को 15 प्रतिशत ही डिस्काउंट मिले- प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन

बता दें, प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन ने भी सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका लगाई है। इस याचिका में मांग की गई है कि सुप्रीम कोर्ट ने जो राहत राजस्थान के स्कूलों को दी है, वही राहत प्रदेश के स्कूलों दे। सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान के स्कूल संचालकों को कहा था कि निजी स्कूल पूरी फीस में से सिर्फ 15 प्रतिशत की कटौती ही पैरेंट्स को दें, बाकी पूरी फीस पैरेंट्स को देनी होगी। अधिवक्ता मयंक क्षीरसागर ने निजी स्कूलों की इस मांग पर आपत्ति लेते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय से निवेदन किया कि पिछला सत्र पूरा बीत चुका है और निजी स्कूल एसोसिएशन ने अपनी याचिका में स्वीकार भी किया है कि वो आदेश को स्वीकारते हुए इस अनुसार फीस ले चुके हैं। इसलिए इस समय इस तरह की मांग अनुचित है। सुप्रीम कोर्ट ने उक्त तर्कों से सहमत होते हुए स्कूल एसोसिएशन की याचिका निरस्त कर दी।

वर्तमान सत्र की फीस का मामला एमपी हाईकोर्ट में लंबित

वर्तमान सत्र में भी टयुशन फीस के नाम पर निजी स्कूल पूरी फीस ले रहे हैं। वर्तमान सत्र में की गई फीस बढ़ोतरी, फीस के कारण पढ़ाई बंद करने, टीसी नहीं देने और परीक्षा परिणाम रोकने जैसी परेशानियों को लेकर जागृत पालक संघ ने अधिवक्ता अभिनव मल्होत्रा के माध्यम से मप्र उच्च न्यायालय जबलपुर में याचिका लगाई है।

मूंछें हों तो... ठाकुर जैसी



बात जब मूंछ की हो तो शराबी फिल्म (film Sharabi) के नथूलाल (Nathulal) जरूर याद आते हैं। जिनकी बड़ी बड़ी मूंछ पर अमिताभ बच्चन का डायलॉग खूब चर्चित हुआ था। उज्जैन में भी एक ऐसे ही नथूलाल हैं जो अपनी मूंछों की वजह से सुर्खियों में रहते हैं। उन्होंने 20 साल से अपनी मूंछ नहीं कटवायी है। उज्जैन आने वाले पर्यटक इनके साथ एक सेल्फी जरूर लेते हैं।

शहर के इंदौर रोड स्थित एक होटल में दरबान का काम करने वाले विजय सिंह ठाकुर की मूंछे 2 फीट लंबी हैं और यही मूंछे अब ठाकुर की पहचान बन चुकी हैं। अपनी लम्बी मूंछों के कारण होटल में आने वाले गेस्ट विजय सिंह के साथ सेल्फी जरूर लेते हैं।

13 सौ का खर्च

मूलतः उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के रहने वाले 51 वर्षीय विजय सिंह ठाकुर को मूंछे बढ़ी करने का ऐसा शौक लगा कि 20 साल से मूंछें नहीं कटवाई हैं। मूंछे 2 फीट की हो चुकी हैं। विजय सिंह ने बताया कि मूंछे बढ़ाना इतना आसान नहीं था। रोजाना इसके लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है। इसके लिए पैसा भी खर्च होता होता है। रोजाना मूंछे धोकर सुखाने के बाद उस पर हेयर वैक्स लगानी पड़ती है। इसका एक पैकेट 290 रुपये का आता है जो करीब 15 दिन चलता है। इसके अलावा रोज रात को सोते समय तेल लगाना पड़ता है। रोजाना क्रीम लगायी जाती है। मूंछों की देखभाल पर एक महीने में करीब 1300 रुपए खर्चा हो जाता है। लेकिन शौक के सामने खर्च के क्या मायने। वो साल में सिर्फ एक या दो बार मूंछों को थोड़ा काटकर शेष देते हैं।

सेल्फी विथ मूंछ

ठाकुर की मूंछ अब सेल्फी की वजह बन गयी हैं। होटल में आने वाले लोग ठाकुर की मूंछे देखकर इतना प्रभावित होते हैं कि उनकी मूंछों की फोटोग्राफी के साथ साथ सेल्फी जरूर लेते हैं। ठाकुर बताते हैं कि कई बार महाकाल मंदिर दर्शन करने जाते हैं तो वहां पर भी उनके साथ सेल्फी लेने के लिए भीड़ लग जाती है। विजय सिंह कहते हैं कि इतनी बड़ी मूंछे कभी भी परेशानी का कारण नहीं बनीं और ना ही परिवार वालों ने कभी मना किया।

कोरोना काल में योग की उपादेयता ।।

डॉ. मुकेश चतुर्वेदी

बी एस सी
बी ए एम एस
Post Graduate
diploma in yog
therapy
M A (मनोविज्ञान)



योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु 'युज' से हुई है जिसका अर्थ है जोड़ना। जीवात्मा को सार्वभौमिक सत्ता अर्थात् परमात्मा के साथ जोड़ना या आत्मा का परमात्मा से मिलन कराना। ये योग का मूल उद्देश्य है योग की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। और इसकी उत्पत्ति हजारों वर्ष पूर्व हुई है। योग विद्या में भगवान शिव को आदियोगी तथा आदि गुरु माना जाता है। भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि मुनियों से ही योग का प्रारंभ माना जाता है। योगीराज कृष्ण ने इसे अपनी तरह से विस्तार दिया। महर्षि पतंजलि ने इसे सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया। वेदों उपनिषदों महाभारत में योग के बारे में बहुत चर्चा हुई है। भगवत गीता में ज्ञान योग भक्ति योग कर्म योग तथा राजयोग का उल्लेख है।

गीता के चौथे अध्याय के पहले श्लोक में योगीराज कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन मैंने इस अविनाशी योग को सूर्य से कहा था। सूर्य ने वैवस्वत मनु से और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से योग के बारे में कहा। जैन और बौद्ध धर्म के जारण और उत्थान काल के दौर में योग के अंगों यम और नियम पर काफी जोर दिया जाने लगा। यम और नियम अर्थात् अहिंसा: सत्य; अस्तेय; ब्रह्मचर्य; अपरिग्रह; शौच; संतोष; संताप; तप और स्वाध्याय का प्रचलन अधिक रहा। महर्षि पतंजलि ने वेद में बिखरी योग विधा को 200 ईसवी पूर्व पहली बार समग्र रूप से प्रस्तुत किया। पतंजलि सूत्र का योग राजयोग है। इसे अष्टांग योग भी कहा जाता है। क्योंकि इसके 8 अंग हैं। यम: नियम: आसन: प्राणायाम: प्रत्याहार; धारणा; ध्यान; और समाधि। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो के धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण में योग का उल्लेख कर तत्कालीन विश्व को योग से परिचित कराया। कहने का तात्पर्य यह है कि योग प्राचीन काल से भारतीय मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। 2014 से माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों के फलस्वरूप 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में संपूर्ण विश्व में मनाया जाने लगा है। वैसे तो योग सर्वकाल में काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है। परंतु विगत कुछ वर्षों से हम एक संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं जो कि कोरोना के रूप में हमारे सामने है। कोरोना एक वायरस जनित रोग है जिस पर अभी तक आधुनिक दवाओं की उपयोगिता सिद्ध नहीं हो पाई है अर्थात् कौन सी दवा कोरोनावायरस पर प्रभावी है यह अभी तक पूर्ण रूप से प्रमाणित नहीं हो पाया है। करो ना की दूसरी लहर में यह देखने में आया कि जिस



व्यक्ति की शारीरिक रोग प्रतिरोधी क्षमता जितनी अधिक थी वह इस बीमारी से उतनी ही अच्छी तरह से लड़ने में सफल रहा। उसे या तो बीमारी हुई ही नहीं और यदि हुई भी तो वह घर पर ही उचित लाक्षणिक चिकित्सा के माध्यम से आसानी से ठीक हो गया।

तो आवश्यक है कि हम अपने शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएं जिससे शरीर इस वायरस जनित बीमारी से लड़ने में सक्षम हो सके। मानव शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता से तात्पर्य उस क्षमता से है जो कि अनेकों बीमारियों से शरीर स्वतः ही लड़ कर अपने आप को स्वस्थ कर लेता है। जैसे हमें कभी बुखार आया यह फोड़े फुंसी हुए और दो-चार दिन में अपने आप ठीक हो गए हम कहते हैं कि यह तो अपने आप ही ठीक हो गए। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता के द्वारा ठीक हुए होते हैं। योग के द्वारा हम इस क्षमता को और अधिक बढ़ा सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी दिनचर्या को नियमित करें। एक निश्चित समय पर हम सोएं और निश्चित समय पर ही प्रातः उठें। रात्रि में देर तक जागना हमारी शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए हानिकारक है। सुबह उठकर घूमना वह भी कम से कम एक घंटा काफी उपयोगी रहेगा। इसके पश्चात हम आसन को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल कर सकते हैं। यदि हमारे पास अधिक समय नहीं है तो 15 मिनट का सूर्य नमस्कार जिसमें कि 12 स्टेप होते हैं हम प्रतिदिन करें यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को काफी बढ़ाएगा। इसके साथ ही कपालभाति अनुलोम विलोम और भस्त्रिका प्राणायाम के द्वारा हम अपने फेफड़ों को मजबूत कर सकते हैं। क्योंकि कोरोना का सबसे अधिक असर फेफड़ों पर ही देखने में आता है तो इन आसनों के द्वारा हम अपने फेफड़ों को मजबूत कर सकते हैं। अपने हृदय को मजबूत कर सकते हैं। अनुलोम विलोम प्राणायाम करते समय एक बात का निश्चित ध्यान रखें इसमें तीन चरण होते हैं पूरक जिसमें कि हम सांस को अंदर लेते हैं कुंभक जिसमें हम सांस को रोक कर रखते हैं और रेचक जिसमें हम सांस को बाहर छोड़ते हैं। इनका एक निश्चित अनुपात होता है। जो की 1/4/2 का

है। यदि हम 5 सेकंड में सांस को अंदर लेते हैं तो हमें कम से कम 20 सेकंड सांस को अंदर रोककर रखना है तथा 10 सेकंड में बाहर धीरे-धीरे छोड़ना है।

श्वास के साथ हम ऑक्सीजन को शरीर के अंदर लेते हैं यह ऑक्सीजन रक्त के द्वारा संपूर्ण शरीर में पहुंचाई जाती है। ऑक्सीजन जिसे कि हम सांस के द्वारा अंदर ले रहे हैं रक्त के साथ मिलकर ऑक्सिहीमोग्लोबिन नाम का एक कंपाउंड बनाती है यह ऑक्सी हीमोग्लोबिन अलग-अलग कोशिकाओं में जाता है वहां पर ऑक्सीजन को छोड़ता है वहां की कार्बन डाइऑक्साइड को लेकर कार्बोक्सीहीमोग्लोबिन के रूप में सांस के द्वारा बाहर निकालता है। तो जब हम सांस को रोक कर रखेंगे तो सांस रोकने के फल स्वरूप शरीर को इतना समय मिलता है कि हर अंग को स्वास पहुंचाई जा सके इसके फलस्वरूप हर अंग को ऑक्सीजन की उपलब्धता हो जाती है। और हर कोशिका से कार्बन ऑक्साइड बाहर निकाली जाती है। यह प्राणायाम का सबसे उपयोगी चरण है। इसीलिए प्राणायाम करने के परिणाम स्वरूप चेहरे पर चमक और शरीर के सभी अंगों का अपने स्तर पर काफी अच्छा कार्य करने की क्षमता को हम विकसित कर सकते हैं। और इसी से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता धीरे-धीरे बढ़ने लगती है। जो कि बहुत से रोगों से हमें दूर रखती है। भस्त्रिका और कपालभाति प्राणायाम से फेफड़ों को काफी मजबूती मिलती है अतः क्षमता अनुसार हर व्यक्ति को इन्हें करना चाहिए। गुनगुने पानी का उपयोग करें गिलोय और नीम के पत्तों का नित्य सेवन हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का कार्य करेगा। 5 मिनट का ध्यान हमें मानसिक रूप से काफी मजबूती प्रदान करेगा। क्योंकि यह देखने में आया कि कोरोना काल में व्यक्ति मानसिक रूप से जब-जब कमजोर हुआ उसे काफी कष्टों का सामना करना पड़ा। इसलिए अपनी दैनिक दिनचर्या में प्राणायाम के बाद 5 मिनट का ध्यान अवश्य शामिल करें। इसके पश्चात ओम की ध्वनि का उच्चारण कम से कम तीन बार करें। इन सब को करने से निश्चित ही आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता में काफी वृद्धि होगी और आप कोरोना या अन्य बीमारियों का मुकाबला करने में काफी सक्षम रहेंगे। आप सभी स्वस्थ रहें प्रसन्न रहें यही ईश्वर से कामना है।

प्रदेश में विश्व के 4 धरोहर स्थल



ओरछा का ऐतिहासिक स्थल

खजुराहो के मंदिर

मध्य प्रदेश अपनी प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौंदर्यता का धनी राज्य है। यहां ऐसे स्थान भी हैं, जिन्हें विश्व धरोहर के रूप में जाना जाता है। पहले यहां तीन स्थानों को विश्व धरोहर स्थल कहा जाता था, लेकिन हालही में यूनेस्को प्रदेश के ओरछा की ऐतिहासिक धरोहरों को भी अस्थाई रूप से विश्व धरोहर का स्थान दे दिया है। यूनेस्को ने इन चारों स्थानों को विश्व की 982 धरोहरों की सूची शामिल किया है।



यूनेस्को ने मध्य प्रदेश के इन चारों स्थानों में हालही में टीकमगढ़ जिले के ओरछा स्थित प्रसिद्ध और ऐतिहासिक स्थलों को भी शामिल कर लिया है। इससे पहले प्रदेश के छतरपुर जिले के खजुराहो में स्थित मंदिरों को इसमें सूचीबद्ध किया था। साथ ही, रायसेन जिले के सांची स्थित स्तूप को इसमें जगह दी जा चुकी है। रायसेन जिले की ही भीमबेटका गुफाओं को यूनेस्को की सूची में विश्व धरोहर का स्थान मिल चुका है। टीकमगढ़ जिले से 80 किलो मीटर दूर उत्तर प्रदेश के झांसी से मात्र 17 किलो मीटर की दूरी पर स्थित ओरछा बेटवा नदी के किनारे बसा एक ऐतिहासिक शहर है। कहा जाता है कि ओरछा को 16वीं सदी में बुंदेला राजा रूद्र प्रताप सिंह ने बसाया था। ओरछा अपने राजा महल या रामराजा मंदिर, शीश महल, जहांगीर महल, राम मंदिर, उद्यान और मंडप आदि के लिए विश्व ख्याति रखता है। ओरछा में राम का एक ऐसा मंदिर है, जहां उनकी पूजा भगवान की तरह नहीं बल्कि राजा की तरह की जाती है। इस मंदिर की सबसे खास बात ये है कि यहां जब सुबह के समय मंदिर के पट खुलते हैं तो सबसे पहले दर्शन पुलिस वाले करते हैं। राजा राम को सूर्योदय के पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात सलामी दी जाती है। इस सलामी के लिए मध्य प्रदेश पुलिस के जवान तैनात किये जाते हैं।



इन भव्य और सांस्कृतिक मंदिरों का निर्माण चंदेल के हर शासक ने अपने शासनकाल के दौरान कम से कम एक मंदिर का निर्माण कराकर किया। मंदिरों का निर्माण कराना चंदेलों की परंपरा रही है इसलिए खजुराहो के सभी मंदिरों का निर्माण किसी ना किसी चंदेल शासक द्वारा कराया गया है। मुख्य तौर पर ये स्थान अपनी वास्तु विशेषज्ञता, बारीक नक्काशियों और कामुक मूर्तियों के लिए जाना जाता है। यही कारण है कि, इस रचना को यूनेस्को द्वारा वैश्विक धरोहर की सूची में शामिल किया गया। खजुराहो के मंदिरों की सुंदरता और आकर्षण के कारण ही इन्हें वैश्विक ख्याति प्राप्त हुई है। आकर्षण का केन्द्र बनी इन मूर्तियों को यहां स्थापित दीवारों, खम्भों आदि पर देखा जा सकता है। मूर्तियों के माध्यम से सांस्कृतिक सुख के बारे में गहन जानकारी दर्शाई गई है। यहां स्थापित मूर्तियों में हमारे रोजमर्रा की जीवनशैली का भी विवरण है। कई शोधकर्ता और विद्वान मानते हैं कि, इन मूर्तियों के चित्रण से एक खास संदेश दिया गया है, जो मंदिर में प्रवेश करने वाले भक्तों पर लागू होता है, कि मंदिर में प्रवेश करने वाले अपने साथ जुड़े विलासिता पूर्ण मन को बाहर छोड़कर स्वच्छ मन से मंदिर में प्रवेश करें। इस विलासिता युक्त मन से छुटाकारा पाने के लिए जरूरी है इनका अनुभव करना। इसलिए इन मूर्तियों का चित्रण सिर्फ मंदिर के बाहरी छोर पर किया गया है।

सांची का बौद्ध स्तूप

भीमबेट का पाषाण आश्रय



मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 52 किलोमीटर दूर रायसेन जिले के सांची में स्थित ये स्तूप भारत ही नहीं विश्वभर के पर्यटकों में काफी लोकप्रिय है। बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में पहचाने जाने वाले सांची स्तूप की सबसे खास बात ये है कि, ये स्तूप भारत के सबसे पुराने पत्थर से बनी इमारतों में से एक है। ये स्मारक तीसरी सदी से बारहवीं सदी के बीच लगभग 1300 वर्षों की अवधि में बनाया गया। इन स्तूपों को बनाने की शुरुआत मूल रूप से सम्राट अशोक ने की थी। इसके बाद समय के कई शासकों ने इसे मूल रूप के अनुसार बनाने का प्रयास किया। स्तूप को 91 मीटर (298.48 फीट) ऊंची पहाड़ी पर बनाया गया है। यूनेस्को ने साल 1989 में इसे भी विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था।



मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से महज 45 किलोमीटर दूर भीमबेटका में स्थित इन पांच पाषाण आश्रयों के समूह को साल 2003 में विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त हुआ था। भीमबेटका पाषाण आश्रय विंध्य पर्वतमाला की तलहटी में मध्य भारत की पठार के दक्षिणी छोर पर बनी हुई गुफाओं का समूह है। यहां भारी मात्रा में बालू पत्थर और अपेक्षाकृत घने जंगल हैं। इनमें मध्य पाषाण काल से ऐतिहासिक काल के बीच की चित्रकला भी देखने को मिलती है। इस स्थान के आस-पास के इक्कीस गांवों के निवासियों की सांस्कृतिक परंपरा में पाषाणी चित्रकारी की छाप भी दिखती है। शोधकर्ताओं के अनुसार, यहां पाई गई चित्रकारी में से कुछ तो करीब 30,000 साल पुरानी भी हैं। गुफाओं में बनी चित्रकारी में नृत्य का प्रारंभिक रूप भी देखने को मिलता है। ये पाषाण स्थल इसी के चलते देश ही नहीं बल्कि विश्वभर में अपनी एक अलग पहचान रखता है।

बकस्वाहा के शैल चित्रों पर एएसआई की मुहर



बुंदेलखंड के बकस्वाहा जंगल की चट्टानों में पाए गए दुर्लभ और हजारों वर्ष पुराने शैल चित्रों/रॉक पेंटिंग पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने भी मुहर लगा दी है। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के आदेश पर पुरातत्व सर्वेक्षण की टीम ने तीन दिन तक बकस्वाहा के शैल चित्रों का सर्वे करने के बाद अपनी विस्तृत रिपोर्ट हाईकोर्ट को भेजी है। कहा कि यहां के सांस्कृतिक इतिहास में कोई कमी प्रतीत नहीं होती। शैल चित्र लंबे समय तक यहां मानव की उपस्थिति दर्शाते हैं।



मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के बकस्वाहा जंगल को हीरा खदान के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पट्टे पर दे दिए जाने से जंगल में 2.15 लाख से ज्यादा हरे पेड़-पौधे कटने के हालात पैदा हो गए हैं। इसका चौतरफा और देशव्यापी विरोध हो रहा है। लगातार आंदोलन जारी हैं। पर्यावरण पैरोकारों ने इसे एनजीटी और हाईकोर्ट के बाद यूएनओ (संयुक्त राष्ट्र संघ) तक पहुंचा दिया है। नागरिक उपभोक्ता मार्गदर्शक मंच अध्यक्ष और पर्यावरण पैरोकार अधिवक्ता डॉ. पीजी नाजपांडे (दिल्ली) ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की जबलपुर मुख्य बेंच में हाल ही इस मुद्दे पर रिट पिटीशन दाखिल की थी। कहा था कि हीरा खनन से बकस्वाहा जंगल में लाखों पेड़-पौधों के अलावा लगभग 25 हजार वर्ष पुराने पाषाण युग के शैल चित्र भी नष्ट होंगे। मांग की कि इसे पुरातात्विक संपदा घोषित किया जाए। रिट पर सुनवाई के बाद 16 जुलाई को हाईकोर्ट की मुख्य बेंच ने केंद्र सरकार, मध्य प्रदेश सरकार और पुरातत्व विभाग से जवाब तलब करते हुए रिपोर्ट मांगी थी। हाईकोर्ट के आदेशों पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई), जबलपुर मंडल की टीम ने अधीक्षण पुरातत्वविद सुजीत नयन के नेतृत्व में 10 से 12 जुलाई तक बकस्वाहा जंगल के शैल चित्रों का सर्वे किया। टीम में सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद कमलकांत वर्मा, ड्राफ्टमैन सुरेंद्र सिंह बिष्ट और शिवम दुबे शामिल रहे। सघन सर्वे के बाद टीम ने अपनी 46 पृष्ठीय रिपोर्ट हाईकोर्ट में पेश करने के लिए अधिवक्ता प्रभात कुमार यादव को सौंप दी है। सर्वे रिपोर्ट में बकस्वाहा जंगल के शैल चित्रों आदि के 50 फोटो भी हैं। रिट दायरकर्ता डॉ. नाजपांडे ने बताया कि रिपोर्ट में कहा गया कि यहां तीन स्थानों पर इतिहास पूर्व की (प्री-हिस्टोरिक) रॉक पेंटिंग्स पाई गई हैं। इनमें कुछ पेंटिंग पाषाण युग के मध्य काल की हैं। कुछ मानव इतिहास (हिस्टोरिक) समय की हैं। इसमें युद्ध के चित्र उक्रे गए हैं। इसके अलावा बकस्वाहा क्षेत्र के कुशमार गांव में सती पाषाण मूर्ति सहित अन्य मूर्तियां मिलीं हैं। (संवाद)

लंबे समय तक नहीं रही मनुष्य की उपस्थिति

सर्वे रिपोर्ट में एएसआई ने कहा कि पुरातात्विक महत्व की साइट्स बकस्वाहा के चारों तरफ 15 किलोमीटर दायरे में फैली हुई है। नदी के

12वीं शताब्दी का लेख भी मिला

एएसआई की सर्वे रिपोर्ट में कहा गया कि बकस्वाहा से 10 किमी दूर कुशमार गांव में सूर्य, चंद्र, शिवलिंगम की जोड़ी, सती प्रथा को दर्शाती मूर्ति और देवनागरी लिपी में खुदा हुआ लेख पाया गया है। यह 11-12वीं शताब्दी का है। 25 किमी दूर उतारिया नाले में काले रंग की रॉक पेंटिंग्स मेसोलिथिक काल की है। यहां अधिकतर चित्र नष्ट कर दिए गए हैं। यहां पहुंचने के लिए करीब 10 किलोमीटर पैदल चलना होता है।

दाहिने तरफ 100 फीट ऊंची प्राकृतिक रॉक शेल्टर में जंगली जानवरों की हड्डियां मिली हैं। प्रतीत होता है कि यहां मनुष्य का आना-जाना या रहना नहीं रहा।

मेसोलिथिक काल के हैं कई शैल चित्र

पुरातत्व विभाग की सर्वे रिपोर्ट में यह भी शामिल है कि बकस्वाहा के ज्यादातर शैल चित्र ईसा पूर्व 8 हजार से 10 हजार वर्ष पुराने मेसोलिथिक काल के हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यहां लंबे अरसे तक मनुष्य की उपस्थिति रही है। पुरातत्व विभाग का कहना है कि यहां सांस्कृतिक इतिहास में कोई कमी प्रतीत नहीं होती। चित्रों में उस समय के हथियारों और अन्य सजावटी चित्रों की भरमार है।

दुनियां में पहचान बना सकते हैं शैल चित्र

इंटेक चेप्टर के बांदा संयोजक और शैल चित्रों पर पिछले डेढ़ दशक से कार्य कर रहे हारिस जमा खां का कहना है कि पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने बहुत ही प्रभावी और वस्तु स्थिति से भरपूर सर्वे रिपोर्ट दी है। कहा कि बकस्वाहा के शैल चित्र बेहद दुर्लभ हैं। यह बुंदेलखंड की पहचान दुनियां में स्थापित कर सकते हैं। इस सांस्कृतिक धरोहर की हर हाल में सुरक्षा होनी चाहिए।

॥श्री हरि॥

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदीजी को एवं समस्त सहयोगी पत्रकार बंधुओं को अनन्तानन्त शुभकामनाएं। संपादकीय से लेकर पत्रिका अन्य प्रमुख विषयों पर निरंतर जनमानस के अन्तर्मन को स्पर्श करती रहे। एवं आमजनों की व्यथा को, सत्य को सत्य कहने का साहस निरंतर सतत रूप से चलता रहे। सामाजिक कुरीतियों, अंधकार को आप की लेखनी सदैव प्रकाश की ओर से लाने के लिए प्रयासरत रहे।

पुनः हृदय की गहराईयों से शुभकामनाएं

मुख्य पुजारी पार्थ भट्ट

(श्री सिद्धि विनायक गणपति मंदिर, खजराना, इंदौर)



मा. नरोत्तम मिश्रा, गृहमंत्री



बंटी गौतम



शुकर्ण मिश्रा



विवेक मिश्रा



सिद्धू गौतम

**75वें स्वतंत्रता दिवस पर
समस्त देशवासियों को
बहुत-बहुत
शुभकामनाएं**



निशांत भार्गव



पिताजी बाबूलालजी चतुर्वेदी



मां श्रीमती शकुंतला चतुर्वेदी



मनोज चतुर्वेदी



विकास चतुर्वेदी (भाई)



रुद्राक्ष चतुर्वेदी (बेटा)

75वें स्वतंत्रता दिवस के
पावन पर्व पर मेरी और
मेरे परिवार की ओर से
सभी देशवासियों को



उन्नति चतुर्वेदी (भांजी)

बहुत बहुत शुभकामनाएं



शुभकामनाकर्ता... विकास चतुर्वेदी

॥ हर हर महादेव ॥

पंडित नीलेश पुरोहित पूर्व अध्यक्ष तीर्थ पंडा
पुरोहित संघ ओकारेश्वर प्रदेश उपाध्यक्ष राष्ट्रीय
संत सुरक्षा मंडल की ओर से हमारा देश हमारा
अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण
पर पत्रिका के संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार भाई
मनोज चतुर्वेदी जी को एवं समस्त टीम को

बहुत बहुत शुभकामनाएं



अशोक कुमार यादव
ASHOK KUMAR YADAV
महानिरीक्षक
INSPECTOR GENERAL

T/No. 0731 - 2620110 (O)
2929007 (R)
Mobile No - 8699881010
E-mail cswt@bsf.nic.in



अर्द्ध शा. प. सं.
D.O.No. 12/20
केन्द्रीय आयुध एवं युद्ध कौशल विद्यालय
Central School of Weapons & Tactics
सीमा सुरक्षा बल, इन्दौर
Border Security Force, Indore
बिजासन रोड, इन्दौर (म. प्र.)-452005
Bijasan Road Indore - 452005 (MP)


Dated the 12.8.2021

मासिक पत्रिका

“हमारा देश हमारा अभिमान”

एक देशभक्त, विनयशील और कर्मठ पत्रकार मनोज चतुर्वेदीजी के संपादन में “हमारा देश हमारा अभिमान” मासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अपनी तथा इन्दौर बीएसएफ परिवार की ओर से अनेकानेक हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास रखता हूँ कि यह पत्रिका, पत्रकारिता एवं समाज में एक अटूट रिश्ता बनाते हुए दिनोंदिन परिवर्तित होते हुए समाज में सुसंस्कृति एवं सभ्यता के उच्च मानकों को स्थापित करने एवं बनाए रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी ताकि हमारे देश का हर नागरिक देश के सैनिक की तरह समर्पित होकर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका अदा करें और अपने कार्य पर गर्व करते हुए आगे बढ़ते देश पर सीना ऊँचा करके अभिमान करें।

पुनः मैं, पत्रिका एवं इससे जुड़े सभी गणमान्यों को शुभकामना देता हूँ और समाज को उचित दिशा देने वाली सकारात्मक पत्रकारिता के लिए अभिनन्दन करता हूँ।


(अशोक कुमार यादव) 12.8.21
महानिरीक्षक
सीमा सुरक्षा बल

श्री मनोज चतुर्वेदी
सम्पादक

पत्रिका “हमारा देश हमारा अभिमान”

देश में 10 साल की उम्र में सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं बच्चे

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्ययन के मुताबिक, देश में 10 साल की उम्र के 37.8 फीसदी बच्चों का फेसबुक अकाउंट है। इसी आयुवर्ग के 24.3 फीसदी बच्चे इंस्टाग्राम पर सक्रिय हैं। एनसीपीसीआर का कहना है कि यह विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा निर्धारित मानदंडों के विपरीत है।



को रोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए लागू लॉकडाउन और ऑनलाइन कक्षाएं के बीच स्कूल जाने वाले बच्चों के स्मार्टफोन और इंटरनेट के यूज को लेकर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) एक अध्ययन किया है। इसमें पता चला कि देश में 10 साल से कम उम्र के बच्चे सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्ययन के मुताबिक, देश में 10 साल की उम्र के 37.8 फीसदी बच्चों का फेसबुक अकाउंट है। इसी आयुवर्ग के 24.3 फीसदी बच्चे इंस्टाग्राम पर सक्रिय हैं। एनसीपीसीआर का कहना है कि यह विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा निर्धारित मानदंडों के विपरीत है।

ऐसे बनाते हैं सोशल मीडिया तक पहुंच

एनसीपीसीआर ने बताया, 'उसके अध्ययन में पाया गया है कि 10 साल की उम्र के बहुत ज्यादा बच्चे सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। 10 साल की उम्र के करीब 37.8 फीसदी बच्चों का फेसबुक अकाउंट है तथा इसी आयुवर्ग के 24.3 फीसदी बच्चे इंस्टाग्राम पर सक्रिय हैं। एनसीपीसीआर के इस अध्ययन में एक दिलचस्प बात यह सामने आई है कि

अकाउंट बनाने के लिए इतनी है उम्र की सीमा... बता दें कि फेसबुक और इंस्टाग्राम पर अकाउंट खोलने के लिए न्यूनतम आयु 13 साल निर्धारित है। मोबाइल फोन और दूसरे डिवाइस के इस्तेमाल का बच्चों पर होने वाले असर को लेकर एनसीपीसीआर ने यह अध्ययन करवाया है।

ज्यादातर बच्चों की अपने माता-पिता के मोबाइल फोन के जरिए सोशल मीडिया और इंटरनेट तक पहुंच है। बता दें कि इस अध्ययन में कुल 5,811 लोग प्रतिभागी शामिल थे। इनमें 3,491 बच्चे, 1534 अभिभावक, 786 शिक्षक और 60 स्कूल थे।

बच्चों के लिए नहीं है अच्छा कंटेंट

कोरोना महामारी के दौरान आए सर्वे में कहा गया है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कई तरह का कंटेंट होता है, जिनमें से बहुत सारे कंटेंट बच्चों के लिए न तो उपयुक्त होते हैं और ना ही उनके अनुकूल होते हैं। इनमें से कुछ कंटेंट हिंसक या अश्लील से लेकर ऑनलाइन दुर्व्यवहार और बच्चों को डराने-धमकाने से संबंधित भी हो सकते हैं। इसलिए, इस संबंध में, उचित निरीक्षण और कड़े नियमों की आवश्यकता है।

महामारी का पड़ा नकारात्मक प्रभाव

अध्ययन के मुताबिक, जहां 29.7 फीसदी बच्चों को लगता है कि महामारी का बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वहीं 43.7 फीसदी का मानना है कि इससे उनकी शिक्षा पर बहुत कम नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि यह स्पष्ट है कि सभी आयु वर्ग के छात्रों को लगता है कि महामारी के कारण उनकी शिक्षा प्रभावित हुई है और कहीं ना कहीं ऑनलाइन लर्निंग काफी अच्छी नहीं हुई है। इसका नकारात्मक प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है।

ईमानदारी पर चलते हुए लक्ष्य पाना असंभव नहीं : गोविंद गोयल

(सीईओ भास्कर वेंकटेश प्रोडक्ट्स लिमिटेड)



मध्यप्रदेश के बड़े उद्योगपतियों में अपनी पहचान रखने वाले एवं समाज सेवी गोविंद गोयल (सी.ई.ओ. भास्कर वेंकटेश प्रोडक्ट्स लिमिटेड) ने विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी से चर्चा करते हुए बताया कि, ईमानदारी के साथ मेहनत की जाए किसी भी लक्ष्य के लिए तो असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। गोयल जी ने बताया कि जब मैं भोपाल आया जब मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा यहाँ तक समस्याओं के कारण मुझे जयपुर में भी कुछ साल तक रहा लेकिन वहाँ भी मुझे वो संतुष्टि नहीं मिली कार्य में और फिर

मैं द्वारा अपने परिवार के साथ भोपाल शिफ्ट हुआ, मेहनत की ईमानदारी पर चला प्रभु पर विस्वास की और आज मेरे पर माँ लक्ष्मी और प्रभु नारायण की कृपा है। और आज परिवार के साथ पूरी टीम के साथ व्यापार स्थापित है। मैं अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष के पद पर कार्य रत रहते हूँ और सभी के सहयोग से समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा हूँ। मैंने कभी भी सत्य बात कहने से परहेज नहीं किया, मैंने मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी में कोषाध्यक्ष के पद पर रहते हुए हमेशा ईमानदारी का पालन किया,

मैंने वेयरहाउसिंग & लॉजिस्टिक कॉर्पोरेशन लिमिटेड (गवर्नमेंट ऑफ इंडिया) में डाइरेक्टर के पद पर रहते हुए लक्ष्य को प्राप्त किया। ज्ञात हो गोविंद गोयल 2013 में मध्यप्रदेश कांग्रेस के टिकट पर भेल constituency असेम्बली इलेक्शन में चुनाव लड़ा था। मैं युवाओं को आपके चैनल के माध्यम से यही कहना चाहता हूँ कि देश सर्वोपरि है। और जब हम समाज को सुधारेगे तो देश मजबूत होगा।
-मनोज चतुर्वेदी से विशेष चर्चा के लिए
धन्यवाद गोविंद गोयल



प्रशासक राम निवास सिकरवार
तहसीलदार डबरा

कौशलेंद्र विक्रम सिंह कलेक्टर, ग्वालियर

शारिव कौसर
सीएमओ, आतरी

15 अगस्त के सुअवसर पर नगर परिषद आंतरी की ओर से
नगरवासियों को **बहुत बहुत शुभकामनाएं**



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश



मा. नरेंद्रसिंह तोमर
केंद्रीय मंत्री



मा. ज्योतिरादित्य सिंधिया
केंद्रीय मंत्री



नरोत्तम मिश्र
गृहमंत्री (मप्र)



विवेक शंजवलकर
सांसद, ग्वालियर



इमरती देवी
पूर्व मंत्री (मप्र)



श्री भरत लाल श्रीवास्तव



75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर

**हार्दिक
शुभकामनाएं**



मोहनसिंह राठौड़, वरिष्ठ
भाजपा नेता

बधाईकर्ता : श्री भरत लाल श्रीवास्तव सौजन्य से : दून पब्लिक स्कूल, गैडोल रोड डबरा



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र



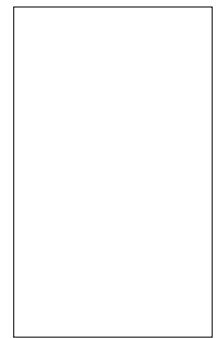
मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र



मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र



शिवदत्त कटारे
प्रशासक नपा परिषद
एवं तहसीलदार



अशोक बाल्मीक
सीएमओ नगर पालिका
परिषद गोरमी

नगर पालिका गोरमी की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस
के अवसर पर **हार्दिक शुभकामनाएं**

गोरमी नगर पालिका के नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी। वैकसीन अवश्य लगवाएं।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बों में रखें, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।





मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

कौशलेन्द्र विक्रम सिंह
डीएम
ग्वालियर

अस्वनी रावत
प्रशासक एवं एसडीएम
भीतरवार

चंद्रकांत शर्मा
सीएमओ नपा
भीतरवार

नगर पालिका भितरवार की ओर से 75वें स्वतंत्रता
दिवस के अवसर पर **हार्दिक शुभकामनाएं**

सहित भितरवार के नागरिकों से अपील करती है....

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क हैं जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बों में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

राज श्री वस्त्रालय, पटेल चाल सिंधी बाजार नीमच की ओर से हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के संपादक भाई मनोज चतुर्वेदी और पूरी टीम को

बहुत बहुत बधाई एवं स्वतंत्रता दिवस की बहुत बहुत शुभकामनाएं...



अशोक कुमार टिलवानी
हाईकोर्ट एडवोकेट



ओम प्रकाश टिलवानी



श्रीमती भारती टिलवानी



हरशुल टिलवानी

शहर के आकर्षण पर्यटन स्थल

गांधी सागर बांध नीमच

गांधी सागर बांध नीमच जिले के पास स्थित एक महत्वपूर्ण आकर्षण स्थल है। आप यहां पर आकर घूम सकते हैं। गांधी सागर बांध चंबल नदी पर बना हुआ सबसे बड़ा बांध है और चंबल नदी मध्य प्रदेश की महत्वपूर्ण नदी है। यह बांध बहुत सुंदर है और विशाल है। गांधी सागर बांध चंबल घाटी परियोजना के अंतर्गत आता है। गांधी सागर बांध मध्यप्रदेश और राजस्थान की सीमा पर बनाया गया है। इस बांध के पानी का और बिजली का बंटवारा आधा-आधा दोनों राज्यों में होता है। यहां पर हाइड्रो पावर प्लांट भी बनाया गया है, जिससे 115 मेगावाट बिजली बनाई जाती है। इस पावर प्लांट में 5 छोटी छोटी इकाइयां स्थापित की गई हैं। इस बांध का निर्माण 1953 में बनना शुरू हुआ था और 1960 में बनकर तैयार हो गया। बरसात के समय अगर आप यहां पर आते हैं, तो गांधी सागर बांध पानी से पूरी तरह भरा होता है और इसके गेट खोले जाते हैं। इस बांध में 19 गेट हैं। यह गेट बरसात के समय खोले जाते हैं, जिससे अपार जल राशि निकलती है। इस दृश्य को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग बरसात के समय यहां पर आते हैं। आप यहां पर आते हैं, तो आपको यहां पर गार्डन भी देखने के लिए मिलता है। इस गार्डन को चंबल माता गार्डन के नाम से जाना जाता है। यह गार्डन बहुत खूबसूरत है। इस गार्डन से आपको गांधी सागर बांध का दृश्य देखने के लिए मिलता है। यहां पर वॉच टावर भी बने हुए हैं, जहां से आप को चंबल नदी के खूबसूरत दृश्य देखने मिलते हैं। इस गार्डन में आपको

एक मूर्तिदेखने के लिए मिलती है, जो बहुत ही खूबसूरत है। इस बांध का उद्घाटन 1960 में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया था। गांधी सागर बांध नीमच जिले से करीब 100 किलोमीटर दूर होगा। आप यहां पर अपनी गाड़ी से पहुंच सकते हैं।

नव तोरण मंदिर खोर नीमच

नव तोरण मंदिर नीमच जिले में स्थित एक प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर नीमच जिले के खोर में स्थित है। यह मंदिर मुख्य नीमच शहर से करीब 20 किलोमीटर दूर है। आप यहां पर अपनी गाड़ी से आ सकते हैं। यह मंदिर बहुत खूबसूरत है और यह मंदिर पत्थरों से बना हुआ है। मंदिर में आप आते हैं, तो आपको शिवलिंग देखने के लिए मिलता है। यहां पर आप वराह अवतार में विष्णु भगवान की प्रतिमा देख सकते हैं, जो पत्थर के बने हुए हैं। नव तोरण मंदिर 11वीं शताब्दी में बना हुआ था। इस मंदिर में 10 अलंकृत मेहराब हैं, या स्तंभ हैं। जिनमें खूबसूरत नक्काशी की गई है और उनमें मालाएं बनाई गई हैं। आप इस मंदिर में घूमने के लिए आ सकते हैं।

समर कुंड महादेव मंदिर नीमच

समर कुंड महादेव मंदिर नीमच शहर में स्थित एक धार्मिक स्थल है। यह मंदिर शिव भगवान जी को समर्पित है। इस मंदिर में आपको एक कुंड देखने के लिए मिलता है, जो बहुत सुंदर लगता है। आप यहां पर अपनी फैमिली और

दोस्तों के साथ घूमने के लिए आ सकते हैं। यह मंदिर नीमच शहर से करीब 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर महाशिवरात्रि को बहुत बड़ा मेले का आयोजन होता है।

श्री भंवर माता मंदिर नीमच

श्री भंवर माता मंदिर नीमच जिले के पास स्थित एक प्राचीन मंदिर है। आप इस मंदिर में घूमने के लिए आ सकते हैं। इस मंदिर के आसपास घना जंगल स्थित है। यहां पर आपको बहुत सारे बंदर भी देखने के लिए मिलते हैं। आप यहां बंदरों से सावधान रहे हैं। यहां पर आपको मां दुर्गा की बहुत बड़ी प्रतिमा देखने के लिए मिलती है, जो बहुत ही अद्भुत लगती है। आप यहां पर आ कर अपना समय बिता सकते हैं। यहां पर एक जलप्रपात भी है, जो बरसात के समय आपको देखने के लिए मिलता है। आपको यहां पर प्रकृति का बहुत अच्छा नजारा देखने को मिलेगा और यहां पर आपको हरियाली से भरी घाटी देखने के लिए मिलेगी। यहां पर आकर आपको बहुत अच्छा लगेगा। भंवर माता मंदिर प्रतापगढ़ जिले की छोटी सदरी तहसील से 3 किमी दूर स्थित है। यह मंदिर नीमच जिले से करीब 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आप यहां पर अपने वाहन से आ सकते हैं। आप यहां पर किराए से टैक्सी बुक करके भी आ सकते हैं। इस मंदिर को भंवर माता शक्ति पीठ के रूप में भी जाना जाता है। यहां पर आपको ज्यादा दुकानें देखने के लिए नहीं मिलेगी, इसलिए आप यहां पर आते हैं, तो आप अपनी तैयारी करके आएं।





भंवर माता झरना नीमच

भंवर माता झरना भंवर माता मंदिर के पास स्थित एक प्राकृतिक जगह है। भंवर माता झरना नीमच शहर के पास स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। आप यहां पर घूमने के लिए आ सकते हैं। यहां पर आप बरसात के समय आते हैं, तो यहां पर आपको भंवर माता झरना देखने के लिए मिलता है। यह झरना बहुत खूबसूरत है और बरसात के समय पूरी तरह से पानी से भरा रहता है। आप इस झरने में नहाने का मजा भी ले सकते हैं। आप यहां पर अपनी फैमिली और दोस्तों के साथ आ सकते हैं। यह जगह बहुत अच्छी है और चारों तरफ से प्राकृतिक वातावरण से घिरी हुई है।

सुखानंद महादेव जी मंदिर -

सुखानंद मंदिर और आश्रम नीमच शहर में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह धार्मिक स्थल है। यह स्थल भगवान शिव को समर्पित है। यहां पर भगवान शिव और संत सुखदेव जी का मंदिर है। यहां पर आपको भगवान शिव का शिवलिंग देखने के लिए मिलता है। यह जगह प्राकृतिक खूबसूरती से भरी हुई है। यहां पर बरसात के समय आपको झरना देखने के लिए मिलता है। यह झरना पहाड़ों से गिरता है, जो बहुत ही शानदार दृश्य लगता है। इस झरने में आप नहाने का मजा भी ले सकते हैं। यहां पर जलकुंड भी बना हुआ है। आपको यहां पर आकर बहुत अच्छा लगेगा। यह मंदिर मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित है। यहां पर घूमने के लिए आया जा सकता है। सुखानंद धाम नीमच शहर से करीब 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आप यहां पर गाड़ी से आ सकते हैं। इस जगह का नाम सुखानंद है। यह जगह अपने नाम के अनुरूप है। सुखानंद का मतलब होता है सुख और आनंद। यहां पर आकर आपको आनंद ही मिलेगा और परम सुख मिलेगा। यहां पर आपको बहुत शांति मिलेगी। प्राचीन समय में यहां पर सुखानंद मुनि ने तपस्या की थी इसलिए इस जगह को सुखानंद धाम के नाम से जाना जाता है। यहां पर प्राचीन गुफा है। यह एक दिन की सैर के लिए सबसे अच्छी जगह है। सुखानंद धाम के रास्ते में आपको हनुमान जी की एक मूर्ति देखने के लिए मिलती है, जो विशाल है।

सीताराम जाजू सागर नीमच

सीताराम जाजू सागर नीमच जिले में घूमने की अच्छी जगह है। यह एक जलाशय है। यह बहुत बड़ा जलाशय है। आप यहां पर आकर घूम सकते हैं। यहां पर आपको सूर्योदय एवं सूर्यास्त का बहुत ही मनोरम दृश्य देखने के लिए मिलता है। आप यहां पर अपने दोस्तों के साथ आ सकते हैं। इस बांध की कुल लंबाई 46.03 किलोमीटर है और बांध की जल संचयन क्षमता 78.12500 लाख किलोलिटर है। यह बांध नीमच जल प्रदाय योजना के अंतर्गत आता है। आप यहां पर आकर घूम सकते हैं। यह नीमच शहर के पास स्थित एक अच्छा पिकनिक स्थल है। आप यहां पर आकर गार्डन में भी घूम सकते हैं। यहां

पर बहुत खूबसूरत गार्डन बना हुआ है। बरसात के समय डैम का पानी ओवरफ्लो होता है, जिसका नजारा बहुत ही मनोरम होता है। आप बरसात के समय यहां पर घूमने के लिए आ सकते हैं। आपको डैम में मगरमच्छ भी देखने के लिए मिल जाते हैं, क्योंकि डैम में मगरमच्छ भी है।

श्री किलेश्वर महादेव मंदिर नीमच

किलेश्वर महादेव मंदिर नीमच शहर में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर भगवान शिव जी को समर्पित है। आप यहां पर घूमने के लिए आ सकते हैं। मंदिर में गार्डन भी स्थित है, जहां पर बहुत सारे झूले लगे हैं और बच्चे यहां पर खेल सकते हैं। आपको मंदिर में आकर बहुत अच्छा लगेगा। यहां पर आपको शिवलिंग के दर्शन करने मिल जाते हैं। इस मंदिर के आसपास बहुत सारे पेड़ पौधे लगे हुए हैं, जिससे यहां का वातावरण बहुत अच्छा लगता है। आप यहां पर आ कर अपना समय शांति से बिता सकते हैं। यह मंदिर समिति द्वारा बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित रखा गया है। मंदिर में आपको फव्वारा भी देखने के लिए मिलेगा। मंदिर के प्रवेश द्वार में दो हाथी बने हुए हैं, जो बहुत ही आकर्षक लगते हैं।

श्री किलेश्वर महादेव मंदिर नीमच

रेलवे स्टेशन के बहुत करीब है। आप यहां पर पैदल भी पहुंच सकते हैं। बालाजी धाम नीमच बालाजी धाम नीमच शहर में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर हनुमान जी को समर्पित है। यहां पर आपको हनुमान जी की भव्य प्रतिमा देखने के लिए मिलती है। इस मंदिर की बनावट भी बहुत खूबसूरत है। आप यहां पर आकर शांति से समय बिता सकते हैं। मंदिर में मंगलवार को बहुत भीड़ रहती है।

सांवरिया सेठ मंदिर नीमच

सांवरिया सेठ मंदिर नीमच शहर के पास स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है और बहुत ही भव्य मंदिर है। यह मंदिर श्री कृष्ण जी को समर्पित है। आप इस मंदिर में घूमने के लिए आ सकते हैं। इस मंदिर की दीवारों पर बहुत ही खूबसूरत नक्काशी की गई है। सांवरिया सेठ मंदिर में दीवारों पर सोने की नक्काशी की गई है। आप यहां पर आकर इस मंदिर की भव्यता को देख सकते हैं। इस मंदिर में आपको राधे कृष्ण जी की भव्य मूर्ति देखने के लिए मिल जाती है।

पिपलिया का किला नीमच

पिपलिया किला नीमच शहर में स्थित एक प्राचीन किला है। यहां पर आपको एक बावली देखने के लिए मिलती है, जिसमें सीढ़ियां बनी हुई हैं। यह बावड़ी बहुत खूबसूरत लगती है। यहां पर एक मंदिर भी है। आप मंदिर भी घूम सकते हैं। बरसात के समय बावड़ी में पानी भर जाता है। इस किले को कुंड वाले मंदिर के नाम से भी जाना जाता

है। यहां पर जो मंदिर स्थित है, वह पत्थर से बना हुआ है। आपको यहां पर आकर अच्छा लगेगा।

भादवा माता मंदिर नीमच

भादवा माता मंदिर नीमच में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर पूरे मध्यप्रदेश में प्रसिद्ध है। यह एक चमत्कारिक मंदिर है। यह मंदिर बहुत प्राचीन है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इस मंदिर में एक कुंड है, जिसमें स्नान करने से लकवा रोग और पोलियो से ग्रसित इंसान ठीक हो सकता है। यहां पर लोग अपनी बीमारियां लेकर आते हैं और ठीक होकर जाते हैं। यहां पर आप भादवा माता के दर्शन कर सकते हैं। भदवामाता चांदी के सिंहासन पर विराजमान है। कहा जाता है कि यहां पर आकर मंत्र मानने से जरूर पूरी होती है। आप भी यहां पर आ सकते हैं। यहां पर आप अपनी फैमिली के साथ आ सकते हैं। मंदिर के चारों तरफ आपको बाजार देखने के लिए मिलता है, जिसमें काफी भीड़ भाड़ होती है। नवरात्रि के समय मंदिर को सजाया जाता है। नवरात्रि के समय भदवामाता को गहनों और नए वस्त्रों से सजाया जाता है, जिससे मूर्ति और भी अद्भुत लगती है। मूर्ति के नीचे आपको नौ देवियों के दर्शन करने के लिए मिलते हैं। यहां पर आकर आपको अच्छा लगेगा। भादवा माता मंदिर नीमच शहर से करीब 18 किलोमीटर दूर होगा। आप यहां पर अपनी गाड़ी से आ सकते हैं। आप यहां पर ऑटो बुक करके भी आ सकते हैं। यहां पर एक अखंड ज्योत जल रही है, जो यहां पर बहुत प्राचीन समय से जल रही है। मंदिर में आपको सभी तरह की सुविधाएं मिल जाती हैं और आपको यहां आकर अच्छा लगेगा।

नीलकंठ महादेव मंदिर नीमच -

नीलकंठ महादेव मंदिर नीमच शहर में स्थित एक अच्छी जगह है। यह मंदिर से भगवान शिव जी को समर्पित है। यहां पर चारों तरफ आपको हरियाली देखने के लिए मिलती है। यहां पर आपको तालाब भी देखने के लिए मिलता है, जिसे नीलकंठ सागर कहा जाता है। आप यहां पर घूमने का प्लान बना सकते हैं। यह पिकनिक मनाने के लिए बहुत अच्छी जगह है। मंदिर में शिवलिंग विराजमान हैं। आप यहां पर आकर शांति से अपना समय बिता सकते हैं। यह मंदिर मनसा और नीमच के बीच में स्थित है।

चतुर्भुज नाथ जी का मन्दिर नीमच

चतुर्भुज नाथ जी का मंदिर गांधी सागर अभ्यारण्य में स्थित है। यह अभ्यारण्य नीमच शहर के बहुत करीब है। यह नीमच शहर के पास स्थित एक मुख्य पर्यटन स्थल है। आप इस मंदिर में घूमने के लिए आ सकते हैं। इस मंदिर में आपको शंकर भगवान जी के दर्शन करने के लिए मिलते हैं। यहां पर आ कर आपको बहुत अच्छा लगेगा। चारों तरफ आपको हरियाली देखने के लिए मिलती है। यहां पर एक नदी भी बहती है।

मनोज चतुर्वेदी संपादक हमारा देश हमारा अभिमान को कोविड 19 में बिफिंग के लिए डबरा एसडीएम के द्वारा दिया गया प्रशस्ति पत्र



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

अनुराग निगवाल
इंदरगढ़ नपा प्रशासक

महेन्द्र यादव
इंदरगढ़ नपा सीएमओ

शुक्ल मिश्रा

विवेक मिश्रा

इंदरगढ़ नगरपालिका की ओर से समस्त इंदरगढ़ के नागरिकों को स्वतंत्रता दिवस की **बहुत बहुत शुभकामनाएं**

सहित इंदरगढ़ के नागरिकों से अपील करती है....

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बों में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



75वें स्वतंत्रता दिवस सभी देशवासियों को बहुत बहुत शुभकामनाएं



कमल किशोर गुप्ता

अध्यक्ष- सीएलआई वेलफेयर एसोसिएशन (एलआईसी) ग्वा. डिवी
अध्यक्ष - वैश्य महासम्मेलन मप्र (उपनगर) ग्वालियर मप्र
उपाध्यक्ष- श्री गहोई वैश्य समाज (वृहत्तर) ग्वालियर, मप्र
पूर्व अध्यक्ष- भारत विकास परिषद्, तानसेन शाखा, ग्वालियर, मप्र
सचिव- राधाकृष्ण हाईस्कूल, लोहामण्डी, ग्वालियर, मप्र



ऑफिस- केके बीमा सेवा केंद्र, राधाकृष्ण हाईस्कूल के पास, लोहामण्डी, ग्वालियर-474003, निवास रामजी विला,
पंजाबी मोहल्ला, सेवानगर, ग्वालियर 474003, Email-kamalkishor_guptalic@gmail.com



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश



मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश



संजय कुमार
कलेक्टर एवं नपा प्रशासक



अनिल दुबे
सीएमओ, नपा दतिया



शुकर्ण मिश्रा



विवेक मिश्रा

दतिया नगरपालिका की ओर से समस्त दतिया के नागरिकों
को स्वतंत्रता दिवस की **बहुत बहुत शुभकामनाएं**

सहित दतिया के नागरिकों से अपील करती है....



1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों



- में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।





मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र



महेन्द्र गुप्ता
प्रशासक मौ नगर
पालिका परिषद



रमेश यादव
सीएमओ नगर पालिका
परिषद मौ

मौ नगरपालिका परिषद की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हार्दिक शुभकामनाएं**

मौ नगरपालिका परिषद नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी। वैक्सीन अवश्य लगावाएं।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

अनुराग निगवाल
इंदरगढ़ नपा प्रशासक

महेन्द्र यादव
इंदरगढ़ नपा सीएमओ

शुकर्ण मिश्रा

विवेक मिश्रा

इंदरगढ़ नगरपालिका की ओर से समस्त इंदरगढ़ के नागरिकों को स्वतंत्रता दिवस की **बहुत बहुत शुभकामनाएं**

सहित इंदरगढ़ के नागरिकों से अपील करती है....

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

चातुर्मास के वैज्ञानिक महत्व को जानिए... स्वस्थ रहिए

धूप दीप सामूहिक रूप से करना कितना विज्ञान सम्मत है हमारी वैदिक ऋषि परंपरा के अनुसार है आपके छोटे से प्रयास का बड़ा परिणाम निकलेगा। दीपक और धूप यज्ञ भारतीय देव संस्कृति के प्राण हैं। सभी शुभ कर्मों में पूजा पाठ में आरती में कार्य के शुभारंभ पर सूतक में दीप और धूप भारतीय संस्कृति के अनिवार्य अंग हैं। इससे आसपास का वातावरण विषाणु कीटाणु मुक्त होता है। हमारी वैदिक ऋषि दृष्टि पूर्व समय से ही वैज्ञानिक रही है, यह प्राणियों के उद्धार के लिए समाज के संरक्षण संचालन के लिए आवश्यक है जिसका उदाहरण है दीपावली। यह पूरे देश में एक ही दिन एक ही समय एक साथ मनाई जाती है जिससे सामूहिक रूप से मौसम परिवर्तन के बाद उत्पन्न बरसात की सीलन सड़न बैक्टीरिया कीटाणुओं, विषाणु संक्रमणों का सामूहिक नाश होता है। पर्यावरण में व्याप्त अशुद्धियां शुद्ध हो जाती हैं। दीपक, कर्म का साक्षी है, प्रकाश ज्ञान का परिचायक है। दीपक से तात्पर्य अज्ञान से ज्ञान की ओर यानी सिद्धि की ओर जाना होता है। यह चेतना है इससे धनात्मक ऊर्जा बढ़ती है, वातावरण में अच्छे आयनों की संख्या बढ़ती है। देश में अखंड दीपक, अखंड धूप जहां पर भी प्रज्वलित है वे अच्छे सकारात्मक ऊर्जा के केंद्र हैं। याद रखिए गाय के घी का दीपक सर्वोत्तम है, तिल सरसों जैतून के तेल का दिया कीटाणु नाशक है।

पहला सुख निरोगी काया

चतुर्मास में बरसात का मौसम सीलन, सड़न, बैक्टीरिया, फंगस कीटाणु उत्पन्न होने का समय है। सामूहिक रोग निवारण के लिए पर्यावरण शुद्धि, पंचभूत शुद्धि, वातावरण की शुद्धि आवश्यक है। ये हमारी स्वयं की रोग प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। इससे वातावरण में व्याप्त वायरस कीटाणु फंगस बैक्टीरिया का नाश होता है। अगर आप यज्ञ नहीं कर सकते तो गाय के गोबर के कंडे पर शुद्ध घी व गुड़ मिलाकर घर पर उपलब्ध सामान से धूप बनाकर अवश्य प्रयोग करें। धूप बनाने के लिए लोंग, देसी कपूर, नीम के पत्ते, तुलसी के पत्ते,

गिलोय हल्दी कूट अजवाइन के पत्ते, दालचीनी, सौंठ, काली मिर्च, अंजीर, मुलेठी, आंवला, तिल, सरसों, नागर मोथा, सौंफ, सहजन, जायफल, जावित्री जटा मासी, आंवला, गूगल, नेपाली धनिया इन सभी नेचुरल चीजों को मिलाकर धूप बनाकर घर पर प्रयोग कर सकते हैं। पर्यावरण संक्रमण से अपने आप को सैनिटाइज करें अपने आसपास सुरक्षा चक्र का निर्माण करें।

रोगों का सामूहिक रीति से निवारण

प्राचीन काल में आरोग्य की वृद्धि और रोग निवारण के लिए यज्ञ होते थे जो चतुर्मास यज्ञ हैं। वह रोगों को दूर करने के लिए होते थे। यह ऋतु संधियों में किए जाते थे क्योंकि ऋतु संधियों में ही अधिक रोग फैलते हैं। यही संधिकाल उथल-पुथल का समय होता है और यही समय कष्ट असुविधा उत्पन्न करता है। यह यज्ञ विशेष प्रकार का यज्ञ है। वैज्ञानिक विधा के अनुसार इस यज्ञ का उद्देश्य वायुमंडल और वातावरण का परिशोधन होता है। वायुमंडल में प्रदूषण भर जाने से प्रकृति संतुलन डगमगा जाता है। ऋतु संधि, दिन रात की संधि यज्ञ करने के लिए सर्वउपयुक्त समय होता है। संधि काल संक्रमण काल होता है, प्रकाश ऋण एवं धन भागों में विभक्त होता है यह रोग कीटाणुओं की वृद्धि के लिए बड़ा ही अनुकूल समय होता है और इन कीटाणुओं की आक्रमण करने की शक्ति भी इस समय बढ़ जाती है। संख्या और शक्ति बढ़ जाने से यह निरोग शरीर को भी रोगी बनाने का साहस करते हैं। होली का वार्षिक यज्ञ बड़े रूप में सामूहिक रूप में मनाने की परंपरा है इससे सामूहिक रूप से वायरस कीटाणु फंगस बैक्टीरिया हानिकारक अन्य वायरस नष्ट होते हैं। होली पर यज्ञ की परंपरा इसीलिए है। इस बार सामूहिक रोग निवारण वायरस कीटाणु बैक्टीरिया के निवारण के लिए सामूहिक यज्ञ अवश्य करें। हमारी भारतीय वैज्ञानिक परंपरा अनुसार यह छोटा सा प्रयोग अवश्य करें। यह एंटीवायरल एंटीवायरस एंटी संक्रमण एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल है।



• डॉ राजेन्द्र दुबे
एडवोकेट एवं पर्यावरणविद



रघुनाथ तिवारी (कार्यकारी अध्यक्ष कांग्रेस
कमेटी ग्वालियर ग्रामीण) की ओर से स्वतंत्रता
दिवस की स्वतंत्रता दिवस की

बहुत बहुत शुभकामनाएं



रघुनाथ तिवारी
कार्यकारी अध्यक्ष कांग्रेस



सुरेश राजे डबरा विधायक
(कांग्रेस) मध्यप्रदेश की ओर से
75वें स्वतंत्रता दिवस की

**बहुत बहुत
शुभकामनाएं**

सुरेश राजे डबरा विधायक (कांग्रेस)

75वें स्वतंत्रता दिवस के
पावन अवसर पर समस्त
देशवासियों को

बहुत बहुत शुभकामनाएं



शिव दयाल धाकड़ तहसीलदार, बहोड़ा पुर, ज्वालियर

75वें स्वतंत्रता दिवस के
पावन अवसर पर समस्त
देशवासियों को

बहुत बहुत शुभकामनाएं



दीपक शुक्ला तहसीलदार, डबरा, ज्वालियर



75वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर
पर समस्त देशवासियों को



शुभकामनाएं

रामसेवक सिंह गुर्जर पूर्व सांसद, ग्वालियर लोकसभा

75वें स्वतंत्रता दिवस के
पावन अवसर पर समस्त
देशवासियों को



बहुत बहुत

शुभकामनाएं

लाखन सिंह पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश एवं वर्तमान विधायक भितरवार



सूर्यमान रावत (अध्यक्ष युवा शक्ति संगठन) की ओर से
समस्त ग्वालियर जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस की



बहुत बहुत



शुभकामनाएं

अपील: बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आये। कोरोना
बीमारी से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए।

2024 के चुनाव में यूपी अहम साबित होगा-मित्रा

क्यों जरूरी है समान नागरिक संहिता



• अमनिय नारायण झा

चर्चा उठना तो लाजिमी है। उठे भी क्यों न? संविधान के नीति निर्देशक तत्व के अधीन अनुच्छेद 44 इसकी दास्तां और प्रधानता को बल देने के लिए काफी है। अनुच्छेद के तहत राज्यों को उचित समय पर सभी धर्मों के लिए समान नागरिक कानून बनाने की खुली वकालत जगजाहिर है। जब संविधान में साफ तौर पर इसका जिक्र किया गया है तो फिर इसे लागू करने में क्या अड़चन है? एक तरफ जहां संविधान की प्रस्तावना में पंथनिरपेक्षता पर जोर दिया गया है तो दूसरी तरफ समान नागरिक संहिता का जिक्र कहीं न कहीं धर्मनिरपेक्षता की कड़ी को साधने का एक महत्वपूर्ण आयाम माना जा सकता है।

जब देश में बाकी पहलुओं के लिए एक समान कानून का पालन किया जाता है तो फिर सभी नागरिकों के लिए व्यक्तिगत कानून एक क्यों नहीं? यह सवाल न सिर्फ मन को कचोटता है बल्कि भारत के संविधान पर भी प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। हालांकि कहीं न कहीं संविधान में भी विरोधाभास का स्वर साफ झलकता है। एक तरफ जहां अनुच्छेद 44 राज्यों को समान नागरिक संहिता की दिशा में कदम बढ़ाने को कहता है तो वहीं दूसरी तरफ अनुच्छेद 37 इसको लागू करने के लिए न्यायालय को अधिकार देने से वंचित करता है। इसका साफ मतलब है कि अगर सरकार इस दिशा में आगे कदम नहीं बढ़ाती है तो न्यायालय का दरवाजा खटखटाने का कोई भी विकल्प मौजूद नहीं रह जाता है। इतना ही नहीं व्यक्तिगत कानूनों को संघ सूची के बदले समवर्ती सूची में रखने के कारण क्या थे? इसी अंतर्विरोध की वजह से कई सारे पहलुओं पर अभी तक मामला विचाराधीन है।

समय समय पर न्यायालय ने भी समान नागरिक संहिता की वकालत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के निर्णयों और टिप्पणियों ने सार्वजनिक पटल पर हमेशा से सुर्खियां बटोरी है। हाल ही में दिल्ली उच्च न्यायालय के द्वारा समान नागरिक

साल 1985 में सर्वोच्च न्यायालय ने मोहम्मद अहमद खान बनाम शाह बानो बेगम केस में संसद को सीधे तौर पर समान नागरिक संहिता स्थापित करने के लिए निर्देशित किया। इसी प्रकरण में राजीव गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले को बदलने के लिए संसद में अध्यादेश लाया था।

संहिता पर की गई टिप्पणी भी चर्चा का विषय बनी हुई है।

साल 1985 में सर्वोच्च न्यायालय ने मोहम्मद अहमद खान बनाम शाह बानो बेगम केस में संसद को सीधे तौर पर समान नागरिक संहिता स्थापित करने के लिए निर्देशित किया। इसी प्रकरण में राजीव गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले को बदलने के लिए संसद में अध्यादेश लाया था। जॉर्डन डिपेंडेंस बनाम एस.एस. चोपड़ा केस, सरला मुद्रल बनाम एसोसिएशन ऑफ इंडिया केस और ऐसे ही न जाने कितने मामलों में समान व्यक्तिगत कानून नहीं होने की वजह से काफी खामियाजा उठाना पड़ा। न्यायालय को भी इसमें दखल देना पड़ा और समान नागरिक संहिता की दिशा में सख्त कदम बढ़ाने के लिए कहा गया।

इसके विपरीत गौर करने वाली बात है कि भारत को छोड़कर दूसरे देशों में मुस्लिम पर्सनल लॉ में काफी सुधार हुए हैं। मुस्लिम बहुल देशों की बात करें तो बहुविवाह और तीन तलाक जैसी लैंगिक असमानता वाली प्रथाओं को भी

समाप्त कर दिया गया है। ट्यूनीशिया, तुर्की, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, इराक, सोमालिया, सीरिया, मिस्र, मोरक्को, ईरान जैसे देशों में एक से अधिक पति-पत्नी होने के कृत्य को पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया है। अब सोचिए जब इन देशों में मुस्लिम पर्सनल लॉ में सुधार हो सकते हैं तो ऐसे कौन से कारण व्याप्त रहें होंगे कि 1930 के दौर में बना मुस्लिम पर्सनल लॉ अभी तक लोगों पर थोपा जा रहा है? क्या धर्म और मजहब सियासत की धारा में इतना बह चुका है कि यह विभिन्न राष्ट्रों में अपनी सहीलियत के अनुसार परिवर्तित होते चला आ रहा है? यह कई सारे सवाल हैं जिसका जवाब आजाद हिंदुस्तान के 75 साल के बाद भी नहीं मिल पाया है। इसे दुर्भाग्य कहे या राजनीतिक मंशा, इसे विडंबना का नाम दें या फिर महज इतोफाक। कारण जो भी हो, आखिरकार इसका खामियाजा जनता को उठाना पड़ रहा है। राजनैतिक लाभ के लिए बीते 75 सालों से राजनीतिक दल इसको हथियार बना कर राज कर रहे हैं।

न्याय में इतना विलंब नहीं होना चाहिए कि वह अन्याय लगने लगे। जरूरत है देश को समान नागरिक संहिता की, जरूरत है देश में सभी को एक चश्मे से देखने की, जरूरत है देश को गोवा जैसे राज्य के उदाहरण को चरितार्थ करने की, जरूरत है देश को एक बेहतर दिशा में आगे कदम बढ़ाने की। क्योंकि सामाजिक न्याय, सामाजिक उत्थान और लैंगिक समानता तब तक स्थापित नहीं हो सकता है जबतक देश में दो विधान लागू रहेंगे।

समान नागरिक संहिता और व्यक्तिगत कानून के आने से समाज को स्थिरता प्रदान होगी। राष्ट्र महान तभी हो सकता है जब इतिहास के पन्नों को टटोल कर उसे वर्तमान में ठीक करने का प्रयास किया जाएगा। जब तक समाज में बैठे अतिम व्यक्ति तक इसका लाभ नहीं पहुंचेगा तब तक यह सिर्फ एक छलावा है और इसके सिवा कुछ भी नहीं। समान नागरिक संहिता के आने से समाज के हर वर्ग तक समानता पहुंचेगी और तब जाकर संविधान का ध्येय सफल माना जाएगा।

भूखे पेट पदक परेड

• रोहित महाजन

परिस्थितियां अलग हैं, तस्वीरें अलग हैं। एक तरफ हो सकता है कुछ लोगों के बच्चे किसी अमेरिकी विश्वविद्यालय में एडमिशन के लिए फॉर्म भर रहे हों। या यह भी हो सकता है कि वे कनाडा में पीआर के लिए आवेदन कर रहे हों, लेकिन वहीं एक दूसरी तस्वीर भी है जब बेरोजगारों, निर्माण मजदूरों या गरीब किसान के बच्चे पनियल दूध और दाल रोटी के आहार के बाद कोई हॉकी स्टिक या पैरों से गेंद खेलकर कड़ी मेहनत कर रहा हो।

या फिर कुश्ती अखाड़े में एक पेड़ पर रस्सी बांधकर उस पर चढ़ता, उतरता हो, या एक झोपड़ी में कुछ वजन उठाते हुए कसरत करता हो। यही सब तो गरीबों के लिए जिम की तरह हैं। ऐसी ही कठिन परिस्थितियों से निकले लोग मैरी कॉम, मीराबाई चानू, रानी रामपाल और सलीमा टेटे, रमेश जाधव और सुमित कुमार, विजेंद्र सिंह और डिङ्को सिंह बनते हैं। वे अंग्रेजी बोलते या लिखते हैं तो हंसी के पात्र बन जाते हैं। वे सांवले होते हैं, चमड़ी में झुर्रियां दिखती हैं, ऐसे माहौल से आए पहलवानों के कान बेहद सूजे हुए होते हैं जिन्हें वे बेतरतीब हेयरस्टाइल से छिपाने की कोशिश करते हैं। बचपन में कुपोषित ये बच्चे बेशक मरियल से होते हैं, लेकिन तेज-तरार होते हैं। उनके पास ऐसा कुछ नहीं होता जिसके चलते उनसे ईर्ष्या की जाये, लेकिन वे सोना जीतते हैं। ये वे बच्चे हैं जो एशियन गेम्स और कॉमनवेल्थ गेम्स में और कभी कभार ओलंपिक गेम्स में भी मेडल जीतकर आपका सीना गर्व से चौड़ा कर देते हैं।

मिलिये भारत के स्पोर्ट्स चैंपियंस से

भा रतीय खेल गरीबों द्वारा संचालित (पावर्ड) हैं। वे शौकिया या मनोरंजन के लिए खेलने वाले नहीं हैं। खेल के मैदान में वह विलासिता के लिए समय नहीं बिताते, उनके परिवार उनके लिए तभी कुछ आर्थिक खर्च उठा पाने की स्थिति में होते हैं जब वे खेल में, निर्माण स्थल या ढाबे पर काम कर उनकी वित्तीय मदद करते हैं। जो चीज उन्हें पेशेवर खिलाड़ी बनाती है, वह है बेहतर जीवन का लालच-एक सरकारी नौकरी, नकद पुरस्कार, जिसके चलते वे सबसे पहले अपने परिवार के लिए एक घर खरीदते हैं। मणिपुर के नोंगपोक काक्चिंग गांव में अपने घर में फर्श पर बैठकर जब मीराबाई ने भोजन करते हुए अपनी एक तस्वीर पोस्ट की, तो लोग यह देखकर हैरान रह गए कि एक ओलंपिक रजत पदक विजेता, एक पूर्व विश्व चैंपियन इतनी मामूली परिस्थितियों में रह रही थीं। जी हां, यह बात सच है कि ऐसी रानियां महलों में नहीं रहती। हमारी खेल रानियां और राजा वास्तव में गरीब हैं, जो अपना खून-पसीना बहाकर चैंपियन बने हैं। उन्होंने जो हासिल किया है उस पर गर्व करने का उनके पास हर दृष्टिकोण से कारण है और हमारे अभिजात्य और कुलीन वर्ग के कुछ लोगों का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने तो हमेशा अपनी सुख-सुविधाओं का उपयोग किया। लेकिन गरीबों और वंचितों के लिए सामाजिक सुधार के अन्य सभी रास्ते बंद कर दिए।



भारत की हॉकी कप्तान रानी रामपाल का जन्म गरीबी में हुआ। पिता रामपाल ने निर्माण स्थलों पर सामान ढोने का काम किया और मां राममूर्ति लोगों के घरों में काम करतीं। रानी जब प्रसिद्ध हुईं और पत्रकार हरियाणा के शाहबाद मारकंडा में उनके उस घर में गये जो अब तक अनाम सा था, तो उसके आसपास का माहौल भले ही बेहद साधारण सा लग रहा था, लेकिन अपने खेल के बारे में वह पूरी तरह से आश्वस्त थीं। आर्थिक रूप से मजबूत होने के बाद सबसे पहले रानी ने अपने माता-पिता के लिए एक घर खरीदा और अपने पिता को उस काम से मुक्त होने के लिए तैयार किया जो वह जीवनभर सामान ढोने के तौर पर करते आ रहे थे।



टीम में रानी की भरोसेमंद सहयोगी सलीमा टेटे झारखंड के एक छोटे से किसान की बेटी है, जहां परिवार अभी भी मिट्टी के घर में रहता है। 20 वर्षीय सलीमा अपने गांव के आसपास के टूर्नामेंटों में, विशेष रूप से बड़े और पुराने खिलाड़ियों के खिलाफ जोरदार डिफेंडर के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली खिलाड़ी रही हैं। टोक्यो में कांस्य पदक के प्लेऑफ में ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ, सलीमा ने अथक परिश्रम के साथ जो धैर्य और गति की लौ बनाये रखी, उससे वह चमक उठीं। उन्होंने अपने परिश्रम का लोहा मनवाया। असल में यह सब इसलिए मुमकिन हुआ क्योंकि बचपन में उन्होंने हॉकी में बहुत कठिन तपस्या की है।



दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हैट्रिक बनाने और ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ गोल दागने वाली वंदना कटारिया को उनके पिता का भरपूर साथ मिला हालांकि पिता की पीएसयू में मामूली नौकरी थी और घर में पैसे की तंगी थी। वंदना के जीवन का सबसे गौरवपूर्ण क्षण तब आया, जब जूनियर टीम में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया। एक समय खेल में निराशा ने वंदना को आत्महत्या के कगार पर धकेल दिया था। अच्छी बात रही कि उन्होंने खुद को मजबूत बनाये रखा और किस्मत से उन्हें भारतीय रेलवे में टिकट चेकर की नौकरी मिल गई। वह 2016 में रियो ओलंपिक में खेलने वाली भारतीय टीम में शामिल हो गई। पत्रकार जब उनके पिता का इंटरव्यू करने के लिए उनके घर आए तो उनके पिता की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा कि देश के लिए सबसे शर्मनाक क्षण तब आया जब कुछ लोग उसके घर के बाहर जमा हो गए और जातिवादी गालियां देते हुए कहने लगे, 'भारत सेमीफाइनल में अर्जेंटीना से इसलिए हार गया क्योंकि राष्ट्रीय टीम में बहुत सारे दलित खिलाड़ी थे।' उनका कहना था कि सुविधासंपन्न लोग यथास्थिति बनाए रखना चाहते हैं-समाज के जिन लोगों ने हमेशा उन्हें हाशिये पर रखा वे क्यों अचानक समानता की बात करते हैं यहां तक कि वरिष्ठों की तरह व्यवहार करना शुरू कर देते हैं? खुद से पूछें क्या हम वंदना के लायक हैं?



...और इधर निराशा

गरीब पृष्ठभूमि से आने वाले युवा खेलों से क्यों जुड़ते हैं? साथ ही यह भी कि क्यों युवा सेना में बतौर जवान भर्ती होते हैं? क्या वे आपसे या मुझसे ज्यादा देशभक्त हैं? सेना में सेवारत पंजाब के एक स्पोर्ट्स शूटर से हमने यही पूछा। उन्होंने कहा, 'कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मेरे गांव में स्कूल बहुत बुरी हालत में है, टीचर कई दिनों तक नहीं आते, हमारे पास जमीन थोड़ी सी है। सेना में भर्ती होने के बाद मेरा जीवन सुरक्षित हो गया- मैं जानता हूँ कि अगर सैन्य सेवा करते मैं मर भी जाऊँ तो मेरे परिवार का ख्याल रखा जाएगा।'

ऐसी ही हताशा के कारण गरीब किसानों, भूमिहीनों या निर्माण स्थल के श्रमिकों के परिवार अपने बच्चों को खेलों में भेजते हैं। 2018 एशियाई खेलों में दो रजत पदक जीतने वाली भारत की सर्वश्रेष्ठ धावक दुती चंद के पास अब लगजरी कारें हैं। असल में वह बुनकरों के परिवार से ताल्लुक रखती हैं, जिनके पास मुश्किल से दो वक्त की रोटी का जुगाड़ हो पाता था। उनकी बड़ी बहन राष्ट्रीय स्तर की धाविका बन गई तो उन्होंने दुती को दौड़ने के लिए प्रेरित किया। नीरस और बोझिल जीवन से बाहर निकलने का यही उनका एकमात्र तरीका था। असल में कम उम्र में शादी, बच्चों की देखभाल, करघे या खेत में मेहनत मजदूरी जैसी ही जिंदगी उनकी पीढ़ियों से चली आ रही थी। दुती निराशा थी। उसी हताशा, दृढ़ इच्छाशक्ति और कड़ी मेहनत ने उन्हें भारत का सर्वश्रेष्ठ धावक बना दिया। बेशक वह टोक्यों में नहीं चमक पाईं। ऐसे कई लोग हैं जो कभी एक दौड़ भी नहीं जीत सकते, और जो अपने बच्चों को डॉक्टर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए मजबूर करते हैं, शायद ऐसे लोगों ने कहा होगा, 'ये बेकार एथलीट कौन हैं जिन्हें हम ओलंपिक में भेजते हैं?' लेकिन याद रखें, दुती भारत की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं। एशियाई खेलों में दो बार की पदक विजेता केरल मैराथन की ओपी जैशा का बचपन बहुत ही भयानक था- पिता की मृत्यु, फिर परिवार की आय का स्रोत तीन गायों का नुकसान। खाना कम था, और जैशा को याद है कि उन्होंने पेट भरने के लिए मिट्टी तक खाई थी।

बैडमिंटन खिलाड़ी और कोच पी गोपीचंद की मां 2 रुपये बचाने के लिए धूप में मीलों पैदल चलकर जाती थीं ताकि उनका बेटा अभ्यास के लिए शटल खरीद सके।

रानी की मां आधी रात को जाग जाती थीं ताकि उनकी बिटिया सुबह जल्दी हॉकी अकादमी पहुंच सके-उनके घर में कोई घड़ी नहीं थी। रानी के कोच कहते थे कि प्रत्येक बच्चा प्रशिक्षण के बाद पीने के लिए अकादमी में 500 मिली दूध साथ लेकर जाए - रानी को दूध की मात्रा 500 मिली बनाने के लिए पानी मिलाना पड़ता था।

सोनीपत के एक कारखाने में दिहाड़ी मजदूर की बेटा नेहा गोयल को घर में बमुश्किल पेटभर खाना मिल पाता था। मुफ्त भोजन की संभावना से वह भारत की पूर्व कप्तान प्रीतम रानी सिवाच की अकादमी की ओर आकर्षित हुई।

आखिर कैसे मिली सफलता: दुती भारत की सर्वश्रेष्ठ बन गई क्योंकि उनके पास और कोई विकल्प था ही नहीं- दुती के पेट में वैसी ही आग थी जैसी भारोत्तोलक मीराबाई चानू या मुक्केबाज सरिता देवी या रोवर दत्त भोकानल या मुक्केबाज सिमरनजीत कौर या रेस-वॉकर खुशबीर कौर के। वे सभी भारत, बल्कि कुछ मामलों में एशिया और दुनिया की चैंपियन बनने के लिए गरीबी और सभी बाधाओं से लड़े और आगे बढ़े।

यह पेट की आग है - जीवित रहने की जरूरत है, और जरूरी नहीं कि खेल के लिए प्यार हो। 2016 में



सेवानिवृत्त होने से पहले भारत के राष्ट्रीय मुक्केबाजी कोच के रूप में लंबे समय तक सेवा करने वाले गुरबक्श सिंह कहते हैं, 'हमारे अधिकांश मुक्केबाज ग्रामीण भारत से आते हैं, निम्न या मध्यम वर्ग की पृष्ठभूमि से। उनकी पहली चिंता रोटी और नौकरी है। वे हताशा हैं। इसीलिए खेल के माध्यम से सफल और सुरक्षित होने को जी-जान लगा देते हैं।'

भारतीय राज्य सरकारी नौकरियों में खिलाड़ियों के लिए एक कोटा प्रदान करते हैं हालांकि, पेशेवर खिलाड़ियों को किसी टूर्नामेंट में भाग लेने के आधार पर नौकरी नहीं मिलती है- उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने के बाद नौकरी मिलती है।

अन्य राज्यों के मुकाबले हरियाणा में सबसे अच्छी व्यवस्था है। यही कारण है कि टोक्यों में भारत के लगभग 24 प्रतिशत एथलीट हरियाणा से थे, जबकि यहां की आबादी भारत की आबादी का लगभग 2.1 प्रतिशत है।

हरियाणा के युवा पहलवान दीपक पुनिया, टोक्यों में कांस्य पदक की लड़ाई लड़ रहे थे। वह 2.5 करोड़ रुपये से महज 10-सेकेंड दूर रह गये। असल में हरियाणा में कांस्य पदक पर यही राशि मिलती है। पुनिया ने अंक गंवाए और हार गए। वह सरकारी नौकरी पाने का मौका भी गंवा बैठे। बेशक सरकारें अपने होनहार खिलाड़ियों को ऑफर कर रही हैं। रवि दहिया को पैसा और नौकरी दोनों मिलने की घोषणा हो गयी। कुल 4 करोड़ रुपये और हरियाणा सिविल सेवा या पुलिस सेवा में प्रतिष्ठित पद मिलेगा।

हरियाणा टीम की नौ महिलाओं को भी यूनाइटेड किंगडम के खिलाफ कांस्य पदक मैच में हारने पर 2.5 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। राज्य की नीति के

अनुसार, प्रत्येक 15 लाख रुपये के हकदार थे - हालांकि, राज्य सरकार ने इस राशि को बढ़ाकर 50 लाख रुपये कर दिया। जो पिछले दिनों एक सम्मान समारोह में खिलाड़ियों को दिया भी गया।

यह पैसा यूं तो अच्छा लगता है, लेकिन याद रखें, खेल में करिअर कम है और जब आप राष्ट्रीय टीम से बाहर होते हैं तो पैसा बहुत जल्दी खत्म होने लगता है। कुछ खिलाड़ियों के लिए, यह उन्हें मिलने वाला एकमात्र वास्तविक मौद्रिक पुरस्कार हो सकता है।

नौकरियों का मिलना निश्चित नहीं है - टोक्यों में अपने शानदार काम के बाद एक नायिका के रूप में उभरीं गोलकीपर सविता पुनिया को सिर्फ वजीफा मिलता है और वह वर्षों से राज्य सरकार से नौकरी के लिए याचना कर रही हैं।

हमारे खिलाड़ियों के लिए और अधिक नकद पुरस्कार होंगे-शायद एक कार या दो भी हो सकती हैं, और आवासीय प्लॉट। आखिर जीवन भर जो दर्द इन्होंने सहा और जो महत्वाकांक्षाएं रही हैं, उसके बदले कुछ तो मिले। असल में, यही सब चीजें हैं जिनके लिए खिलाड़ी खेल के मैदान में उतरते हैं। खेलों में आने का कारण आजीविका, मेज पर सजी भोजन की थाली, नौकरी, अपने और अपने परिवार के जीवन को सुरक्षित करने के लिए वे जी-जान लगा देते हैं। ये खिलाड़ी भारत का गौरव हैं-अपनी उपलब्धियों से उन्हें गर्व होना ही चाहिए। हमें उन्हें सम्मान देना चाहिए, हमारी सरकार को, समाज को और राष्ट्र को भी यह सब देना चाहिए। इन सब पर तो विचार किया ही जाना चाहिए। आखिर हम उन्हें चार साल में एक बार याद करते हैं। इन खिलाड़ियों का जीवन प्रेरक तो है ही, विचारणीय भी है।

यूरिक एसिड से बचना है तो सुधारें लाइफ स्टाइल...



आजकल लोगों में यूरिक एसिड की समस्या बहुत ज्यादा देखने को मिल रही है। असल में असंतुलित भोजन, जरूरत से ज्यादा स्ट्रेस और नींद पूरी न लेना यूरिक एसिड के मुख्य कारण हैं। शरीर में अलग-अलग तरह के दर्द होते हैं जिनका बड़ा कारण यूरिक एसिड है। वैसे तो यूरिक एसिड यूरिन के माध्यम से शरीर के बाहर निकल जाता है, मगर कई बार यह शरीर में रह जाता है जिससे यूरिक एसिड के साथ-साथ और भी कई बीमारियां उत्पन्न होने लगती हैं।



कारण और निदान



शरीर में यूरिक एसिड बढ़ने के कई कारण हैं, मसलन-गलत खान-पान। जरूरत से ज्यादा मीठा, प्रोटीन और फ्रूक्टोस युक्त भोजन। सी फूड इत्यादि। मैनोपोज के बाद औरतों के शरीर में हार्मोनल चेंजेज की वजह से भी यूरिक एसिड बढ़ सकता है। यूरिक एसिड को नियंत्रित करने के लिए अपने आहार और जीवन शैली में बदलाव करने होंगे और खानपान पर भी ध्यान रखना होगा। इसके लिए जरूरी है कि खाना खाने के बाद वज्रासन में बैठें। खूब सारा पानी पीयें। शरीर को हाइड्रेट रखें। ताजे फलों का रस, नारियल पानी, ग्रीन टी, नींबू विटामिन सी, डी, ई से भरपूर खाद्य पदार्थों का सेवन करें। हरी सब्जियां जैसे-लौकी, धनिया लें। हर रोज लहसुन का सेवन करें। सुबह-शाम 45 मिनट सैर करें। खूब सलाद खायें। फाइबर युक्त भोजन करें। छोटी इलायची, अजवायन का प्रयोग करें। सेब यूरिक एसिड को कंट्रोल करने में बहुत फायदेमंद है। सुबह उठकर अखरोट और बादाम का सेवन करने से भी यूरिक एसिड को कंट्रोल करने में मदद मिलेगी।

अधिक प्रोटीन सेवन न करें



यूरिक एसिड में एसिडिक चीजें, हाई प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ जैसे- मटर, पालक, आलू, भिंडी का सेवन न करें। इसके अलावा जंक फूड, फास्ट फूड, मैदे से बनी चीजें भी न लें। चाय, कॉफी का अधिक सेवन न करें। शराब, कोल्ड ड्रिंक, पैकेट जूस न लें। पनीर, फैट मिल्क, दही न लें। दही की जगह लस्सी ले सकते हैं। यूरिक एसिड की समस्या हो तो बिना छिलके वाली ऐसी दालें खानी चाहिए जिनमें अधिक मात्रा में प्रोटीन न हो। इसके अलावा मूंग दाल, राजमा, काले चने, उड़द, सोयाबीन, छिलके वाली मसूर दाल आदि का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए। एक बात का हमेशा ध्यान रखें हमारे शरीर में इम्यूनोटी यानी रोग प्रतिरोधक क्षमता का बहुत महत्व है। अगर हमारी शरीर की इम्यूनोटी स्ट्रॉंग है तो हम किसी भी बीमारी (बैक्टीरिया या वायरस) से आसानी से लड़ सकते हैं। इसलिए अपनी इम्यूनोटी बढ़ाएं और लाइफ स्टाइल को ऐसा रखें कि आप स्वस्थ रहें।

क्या है यूरिक एसिड : यह एक कार्बोनिक कंपाउंड है जो कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन और नाइट्रोजन तत्वों से बना होता है। जब शरीर में इसकी मात्रा बढ़ जाती है तो शरीर में यूरिक एसिड का लेवल बढ़ने लगता है। जब किडनी शरीर में इन तत्वों को अच्छी तरह से फिल्टर नहीं कर पाती तो ये गैस हड्डियों में जमा होने लगती है जिस वजह से जोड़ों में दर्द, सूजन और कसाव होने लगता है। अगर समय रहते ध्यान न दिया जाए तो यह गठिया, गाउट, आर्थराइटिस और किडनी की बीमारी होने का कारण बन जाता है। इससे शरीर में, जोड़ों में दर्द और सूजन होने लगती है।

इस तरह बचें बरसात के मौसम की बीमारियों से



सेहत के लिहाज से बरसात का मौसम बहुत संवेदनशील होता है। शास्त्रों में भी इस मौसम में गरिष्ठ भोजन से बचने की सलाह दी गई है। आपके घर में भी बुजुर्ग कहते होंगे कि श्रावण मास में तामसिक भोजन से दूर रहें। असल में श्रावण मास का तात्पर्य बरसात के मौसम से ही है। इसी मौसम में ही नॉनवेज से भी दूर रहने की सलाह दी जाती है। भीषण गर्मी के दौरान जब बारिश होती है तो मौसमी राहत के साथ ही संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है।



य शोदा अस्पताल कौशांबी, गाजियाबाद में वरिष्ठ फिजीशियन डॉ. अंशुमान त्यागी कहते हैं इस मौसम में साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाना बेहद जरूरी है। पीने वाला पानी साफ और शुद्ध हो। बेशक आज तमाम कंपनियों के आरओ उपलब्ध हैं, लेकिन उबला पानी पीना आज भी सबसे ज्यादा सुरक्षित माना जाता है। कोई परेशानी हो तो चिकित्सक की सलाह पर ही दवा लें, चिकित्सक की ओर से खानपान को लेकर दी गई हिदायतों का अच्छी तरह से पालन करें।

किसी भी तरह का संक्रमण सबसे ज्यादा बच्चों को प्रभावित करता है। इसके दो कारण हैं। एक, उनकी प्रतिरोधक क्षमता थोड़ी कमजोर होती है। दूसरे, बड़े समय के मुताबिक अपना खानपान और रहन सहन आसानी से बदल लेते हैं लेकिन बच्चों को इसमें परेशानी होती है। जैसे गला खराब होने के बावजूद फ्रिज से लेकर ठंडा पानी पी लेना अधिकतर बच्चों की आदत होती है। बरसात के मौसम में बच्चों को आईसक्रीम या ठंडे पेय लेने से मना करें। पकवान भी ज्यादा न बनायें। खुद भी सुपाच्य भोजन करें और बच्चों के लिए भी इस बात का विशेष ध्यान रखें। केवल ठंडा ही नहीं, इन दिनों खट्टा खाने से भी परहेज करने की सलाह डॉक्टर देते हैं। हल्का भोजन करें। सब्जी बनाने से पहले उसे अच्छे से साफ करना न भूलें। नमी के चलते इस मौसम में आटा और बेसन जैसी चीजें भी जल्दी खराब हो जाती हैं। नमी से बचाने के लिए इन्हें आप फ्रिज में रख सकते हैं।

इस बात पर भी ध्यान देने की जरूरत है कि सुबह और शाम के समय बच्चे घर से बाहर निकलें तो पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनें, ताकि मच्छरों से बचाव हो सके। कोविड-19 का संक्रमण काफी कम हो गया लेकिन अभी भी सतर्कता बरतने की पूरी जरूरत है। बच्चों को फिजीकल एक्टिविटी जरूर कराएं। रोजाना कुछ देर बच्चों के लिए धूप में रहना भी जरूरी है ताकि उनका शरीर विटामिन-डी की कमी पूरी कर सके। अपनी देखरेख में कम से कम आधा घंटा बच्चों को रोजाना धूप में जरूर खिलाएं। ऐसा करने से आप जहां बच्चों का सुपरविजन कर सकेंगे वहीं खुद भी धूप ले सकेंगे। आइये जानते हैं इस मौसम की बीमारियों और उनसे बचाव के उपायों के बारे में-

मलेरिया

सर्दी के साथ बुखार आना इसका मुख्य लक्षण है। यह बुखार मादा एनीफिलीज मच्छर के काटने से होता है। मच्छर न पनपे, इसलिए जरूरी है कि घर के आसपास जल जमाव न होने दें। मलेरिया से पीड़ित दूसरे को भी संक्रमित कर सकता है। इसलिए घर में यदि कोई संक्रमित हो गया हो तो उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले सभी सामान अलग रखें। बेहतर हो कि उसकी चारपाई भी थोड़ी दूरी पर हो। ऐसे में घर में भी सभी लोग मास्क इस्तेमाल कर सकें तो बचाव में काफी मदद मिलेगी।



डेंगू

यह भी मच्छर जनित रोग है। इसमें अक्सर तेज बुखार आता है। डेंगू के लिए जिम्मेदार मच्छर साफ पानी में पनपता है। यह मच्छर ज्यादा ऊंचाई तक नहीं उड़ पाता। इससे बचाव के लिए इन दिनों हाफ पेंट का इस्तेमाल बिल्कुल बंद कर दें। घर के आसपास पानी जमा न होने दें। कूलर न चलाएँ तो बेहतर है।

डायरिया

बरसात के मौसम में होने वाली यह सबसे आम बीमारी है। यह बीमारी जीवाणुओं के संक्रमण से होती है। दूषित पानी और भोजन इसका सबसे बड़ा कारण है। डायरिया होने पर पेट में ऐंठन के साथ उल्टी-दस्त हो जाते हैं, जो शरीर में पानी की कमी का कारण बन जाता है। इसलिए इस मौसम में भोजन को अच्छी तरह से ढककर रखें। ताजा खाना ही खाएं। साफ और हो सके तो उबला पानी पीएं।

सब जीवों का आधार एक



भगवद्गीता में न केवल मानव जाति की एकता पर बल दिया गया है, बल्कि समस्त जीवन की अखंडता का दर्शन भी प्रस्तुत किया गया है। सभी जीवों और वस्तुओं का आधार एक ही है।



• विजय सिंगल

परम ब्रह्म (परमात्मा) का वर्णन करते हुए श्लोक संख्या 13.17 में कहा गया है कि अविभाज्य होते हुए भी परमात्मा भिन्न-भिन्न जीवों में विभाजित हुआ प्रतीत होता है। वह समस्त जीवों का पालन करने वाला, संहार करने वाला और फिर से उत्पन्न करने वाला है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सभी प्राणी परमात्मा में ही स्थित हैं। सभी उसी से उत्पन्न होते हैं और उसके द्वारा ही पोषित होते हैं और फिर अंत में उसी में समा जाते हैं। उससे अलग किसी का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता।

प्राणियों की बहुलता में विभाजित दिखने के बावजूद परमात्मा एक अभिन्न और अविभाजित वास्तविकता है। वह सभी जीवों का मूल तत्व है। इस प्रकार सभी प्राणियों की एकता ही सत्य है और दृश्यमान बहुलता उस शाश्वत सत्य की अभिव्यक्ति है।

श्लोक संख्या 13.31 में जीवन प्रवाह की

एकात्मता को फिर से दर्शाया गया है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि जब मनुष्य पृथक-पृथक जीवों को एक ही (परमात्मा) में स्थित देखता है और उसी परमात्मा से ही सभी जीवों का विस्तार (सब ओर फैले हुए) देखता है, उस समय वह सच्चिदानन्दधन ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। दूसरे शब्दों में जब कोई व्यक्ति यह समझ जाता है कि परमात्मा प्रत्येक जीव में, जीवात्मा के रूप में, सदैव मौजूद रहता है तो वह परम पिता परमेश्वर के साथ एकाकार हो जाता है। तब वह परम सत्य के वास्तविक स्वरूप अर्थात् शाश्वत आनंद का अनुभव करता है।

7.4 से 7.6 तक के श्लोकों में सभी प्राणियों की उत्पत्ति और अंत का विश्लेषण किया गया है। जैसा कि इन श्लोकों में वर्णित है, ईश्वर की दो प्रकार की प्रकृतियां होती हैं- भौतिक प्रकृति और चेतन प्रकृति। प्रत्येक व्यक्ति इन दो स्वभावों में जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। ईश्वर की उपर्युक्त प्रकृति के अनुरूप प्रत्येक मनुष्य के जीवन के दो पहलू होते

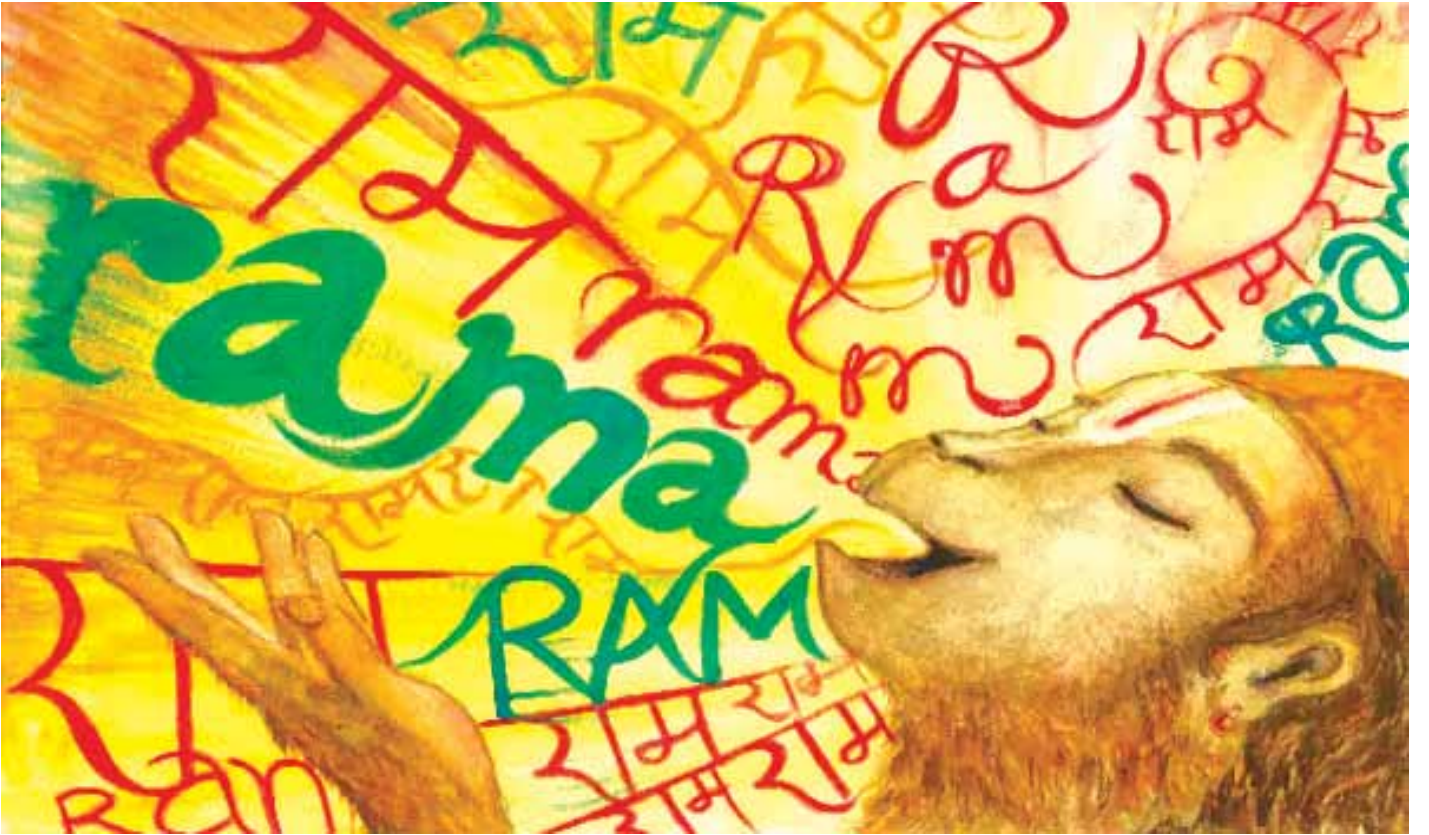
हैं- एक मन और शरीर तथा दूसरा आत्मा। यह दोनों ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि सभी का स्रोत और गंतव्य एक ही है।

श्लोक संख्या 5.18 में भी जीवन की संपूर्ण धारा की समानता को स्पष्ट रूप से समझाया गया है। इसमें कहा गया है कि ज्ञानीजन- एक विद्वान और विनम्र ब्राह्मण, एक गाय, एक हाथी, एक कुत्ता या चांडाल - को समान दृष्टि से देखते हैं। दूसरे शब्दों में, ज्ञान से संपन्न व्यक्ति यह जानता है कि सब प्राणियों की शाश्वत और अपरिवर्तनीय वास्तविकता एक ही है। अतः ऊंच-नीच, यहां तक कि मनुष्य और पशु के बीच के सभी भेद मिट जाते हैं। ऐसा ज्ञानी पुरुष सभी को समदृष्टि यानी समान रूप से देखता है।

श्लोक संख्या 6.29 में भी जीवन के विभिन्न रूपों की एकता पर बल दिया गया है। वहां कहा गया है कि जिस मनुष्य की आत्मा योग से युक्त है, वह आत्मा को सब प्राणियों में व्याप्त और सब प्राणियों को आत्मा में स्थित देखता है।

राम नाम की महिमा

श्री राम पवित्रता की परिसीमा का एक अद्भुत नाम, ज्ञान और गुणों की रूपरेखा का अद्भुत, अलौकिक, दिव्य धाम, श्रीराम चरणों में कोटिशः प्रणाम। भारत की पवित्र धरा पर अवतरित राम ईश्वर के एक निराकार ओंकार स्वरूप का एक साकार रूप, जिसमें विराजे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, त्रिलोकी धाम। वैसे तो प्रभु श्री राम भगवान विष्णु के अवतार हैं, पर इनके त्रिगुण ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो एक ही शक्ति के तीन रूप हैं, एक पारलौकिक शक्ति का आभास दिलाते हैं। इस बात की अनुभूति भगवान शिव द्वारा श्री राम नाम का निरंतर जाप है।



भगवान श्रीराम ने रामेश्वर की स्थापना के समय जो रामेश्वर की व्याख्या की, उसके अनुसार जो राम का ईश्वर है, वही रामेश्वर है, वहीं दूसरी ओर महादेव ने रामेश्वर की व्याख्या कुछ इस तरह से की कि जिसका ईश्वर राम है, वही रामेश्वर है। कितनी अद्भुत व्याख्या है दोनों की। दोनों बातें यही आभास कराती हैं कि बिना राम को भजे शिव को प्रसन्न करना आसान नहीं और शिव विमुख श्रीराम को कदापि नहीं पा सकता। हमारे धार्मिक ग्रंथों में कुछ ऐसा ही व्याख्यान है। इससे एक चीज तो सपष्ट है राम वह पवित्र नाम जिसके उच्चारण से संपूर्ण ईश्वरीय रूपों की वंदना स्वतः ही हो जाती है। जहां एक ओर श्रीकृष्ण प्रेम द्वारा ईश्वर प्राप्ति को सहज बताते हैं, वहीं दूसरी ओर श्री राम कर्तव्य व भावना की पराकाष्ठा को ही सर्वोपरि होने का एहसास दिलाते हैं। पिता के प्रति वचन पालन का कर्तव्य जो श्रीराम के प्रेम, देवी सीता को वन के दुखों से नहीं बचा पाते व राजकाज के कर्तव्य, देवी सीता को वन भेज श्री

राम को उनके वियोग में कष्ट का एहसास दिलाते हैं। इनसान से भगवान की यात्रा स्वयं परमात्मा को भी कठिन परिस्थितियों से गुजर कर ही प्राप्त होती है। कर्तव्य की तेज धार पर पग धरना चाहे उसमें अनगिनत शूल ही क्यों न चुभ रहे हों, मर्यादा का कलश ही है, जो इनसानी यात्रा को ईश्वरत्व तक ले जा सकता है। श्री राम कर्तव्य की दिव्य धारा का एक पवित्र नाम जो शिव के आराध्य की परिभाषा प्रतीत होती है। राम के भक्त रूप में भगवान शिव के ग्यारहवें रुद्र के रूप में भगवान हनुमान जी अवतरित हुए। राम नाम जिसके उच्चारण से तीनों लोक पवित्र हो जाते हैं। उस नाम की महिमा हम भूलते ही जा रहे हैं।

पूरा विश्व हनुमान चालीसा की चौपाइयों के एक-एक शब्द को एक मंत्र के रूप में पहचान चुका है, एक शक्ति के रूप में पहचानने लगा है, जिसका प्रमाण विदेश के कई बड़े नेताओं की जेब में हनुमान की प्रतिमा या हनुमान चालीसा का निरंतर पाठ है, लेकिन विडंबना है जिन श्री राम का हनुमान जी हर पल

ध्यान करते हैं, राम-राम का जाप करते हैं, उस नाम की महिमा को हमारी धरा ही भूलती नजर आ रही है। जरा सोचिए जिन राम के नाम की महिमा अपरंपार है, उस राम नाम रूपी दिव्य कवच को अपने पास रखें, तो निस्संदेह शिव व हनुमान जी दोनों जल्द प्राप्य हैं। अनंत की अनंतता का एहसास उसमें छिपी दिव्यता ही कराती है। श्री राम परमात्मा के अवतारों में एक ऐसा अवतार है, जिसने मर्यादा की शक्ति को कर्तव्य की धार पर सर्वोपरि बना दिया। अनगिनत कष्टों को भोगते हुए, वियोग के कष्टों में रह कर भी अपने चहुं ओर सुख का प्रकाश जो फैलाए, वही है श्री राम। मंत्रों में महामंत्र है, यह नाम श्री राम। जैसा कि ग्रंथों में बताया है श्री राम नाम की महिमा का व्याख्यान तो स्वयं त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं कर सकते। राम नाम की शक्ति अनंत है, जिसकी कोई सीमा नहीं। सीमा ही भी कैसे सकती है, यह तो वह नाम है जिसके उच्चारण से देवी सीता के साथ हनुमान जी व साक्षत शिव भी प्राप्य हैं।



शिवराज सिंह
मुख्यमंत्री



नरेंद्र सिंह तोमर
केंद्रीय मंत्री



ज्योतिरादित्य सिंधिया
केंद्रीय मंत्री



नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री (मप्र)



बी.डी. शर्मा
प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा



विवेक शंजवलकर
सांसद, ग्वालियर



इमरती देवी
पूर्व मंत्री (मप्र)



कौशल शर्मा
जिला ग्रामीण अध्यक्ष, भारती जनता पार्टी



बंटी गौतम



विवेक मिश्रा



जितेंद्र चतुर्वेदी
वरिष्ठ नेता बीजेपी



मेरे और मेरे परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अवसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक मेरे छोटे भाई मनोज चतुर्वेदी जी को एव समस्त टीम को **बहुत बहुत शुभकामनाएं**

शुभकामनाएं कर्ता : कौशल शर्मा, जिला ग्रामीण अध्यक्ष भारती जनता पार्टी



मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मप्र



मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मप्र



मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मप्र



अवधेश बड़ोले
डिप्टी कलेक्टर एवं
मालनपुर नया प्रशासक



विनय कुमार भारद्वाज
सीएमओ मालनपुर
नगर पालिका परिषद

मालनपुर नगरपालिका परिषद की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **हादिक शुभकामनाएं**

मालनपुर नगरपालिका परिषद नागरिकों से अपील करती है

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी। वैक्सिन अवश्य लगावाएं।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों

- में ही पृथक-पृथक डिब्बों में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।



शिक्षा पर महामारी का प्रभाव

को विड-9 महामारी ने इतिहास में शिक्षा प्रणालियों का सबसे बड़ा व्यवधान पैदा किया है। इसने 90 से अधिक देशों और सभी महाद्वीप में लगभग 1.6 बिलियन शिक्षार्थियों को प्रभावित किया। स्कूलों और अन्य शिक्षण स्थानों के बंद होने से 94 प्रतिशत प्रभावित हुए हैं दुनिया की छात्र आबादी निम्न और निम्न-मध्यम आय वाले देशों में 99 प्रतिशत तक है। इस शिक्षा में व्यवधान के कारण शिक्षा से परे काफी प्रभाव पड़ता रहेगा। शैक्षिक संस्थानों के बंद होने से बच्चों और समुदायों के लिए आवश्यक सेवाओं के प्रावधान में बाधा आती है, पौष्टिक भोजन तक पहुंच सहित, इसने कई माता-पिता की काम करने की क्षमता को प्रभावित किया है, और महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा के जोखिम को बढ़ाया है।

दूसरी ओर, इस संकट ने शिक्षा क्षेत्र के भीतर नवाचार को प्रेरित किया है। हमने शिक्षा और प्रशिक्षण निरंतरता के समर्थन में अभिनव दृष्टिकोण देखे हैं दूरस्थ शिक्षा समाधान शुरू किए गए। यूनेस्को द्वारा वैश्विक शिक्षा गठबंधन सहित शिक्षा निरंतरता का समर्थन करने के लिए दुनिया भर की सरकारों द्वारा त्वरित प्रतिक्रिया दी गई। वे शिक्षकों और सरकारों की आवश्यक भूमिका को भी याद दिलाते हैं लेकिन इन बदलावों ने यह भी उजागर किया है कि सीखने का आशाजनक भविष्य और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के तरीकों में त्वरित बदलावों को किसी को पीछे नहीं छोड़ने की अनिवार्यता से अलग नहीं किया जा सकता। सरकार का कर्तव्य है कि वह सीखने के लिए संसाधनों की कमी से प्रभावित युवाओं और बच्चों के लिए सुविधाएं उपलब्ध करे, इसके लिए बेहतर शिक्षण पेशे की जरूरत है और शिक्षा वितरण के नए तरीकों में बेहतर प्रशिक्षण की जरूरत है। हमने एक ऐसे युग में प्रवेश किया है, जहां आज हर छात्र को किसी न किसी तरीके से ऑनलाइन कक्षाओं तक पहुंच हो सकती है। स्कूल इसे माइक्रोसॉफ्ट टीमां, या



**प्रोफेसर श्रीमती
शिल्पी पाटिल**
असिस्टेंट प्रोफेसर, राज
यूनिवर्सिटी इंदौर, मध्यप्रदेश

गूगल क्लासरूम आदि जैसे कई प्लेटफॉर्मों के माध्यम से कर रहा है, जो बेहतर शिक्षा प्रणाली को फिर से आकार देने के लिए संभावित तकनीक को अच्छा साबित करता है।

अंत में लेकिन कम नहीं शिक्षा पर कोविड-9 संकट के सदमे अभूतपूर्व है। इसने अंतरराष्ट्रीय शिक्षा लक्ष्य की प्राप्ति पर घड़ी को वापस सेट कर दिया है और इसने गरीब और सबसे कमजोर को प्रभावित किया है। दूसरी ओर, शिक्षा का तकनीकी तरीका न केवल स्कूलों में छात्रों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है बल्कि कुछ बड़े कॉलेज स्नातकों के लिए वर्चुअल प्लेसमेंट आयोजित करने के लिए भी ले रहे हैं। यह उन्हें पूर्ण सर्कल का हिस्सा बनने और महामारी के प्रभाव को कम करने की अनुमति देता है। तो इस महामारी में भारत में शिक्षा के लिए तकनीक कितनी महत्वपूर्ण रही है, होगा यह पर है हम महामारी के अच्छे और बुरे चेहरों को समझने में सक्षम हो।

त्रिदेव ट्रांसपोर्ट टूल्स एंड ट्रेवल्स कम्पनी की ओर
से स्वतंत्रता दिवस की सभी देशवासियों को



बहुत बहुत शुभकामनाएं



शुभकामनाकर्ता

प्रो. रवि परिहार, प्रो. रवि कांत शर्मा, सुनील प्रजापति



मेरे और मेरे परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अबसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक आदरणीय मनोज चतुर्वेदी जी को एव समस्त टीम को

 **बहुत बहुत** 
शुभकामनाएं
सौम्या, सदस्य समाज सेवी संस्था



मेरे और मेरे परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अबसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक आदरणीय मनोज चतुर्वेदी जी को एव समस्त टीम को

 **बहुत बहुत** 
शुभकामनाएं
रुचि चतुर्वेदी, सदस्य समाज सेवी संस्था

मेरे और मेरे परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अबसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक आदरणीय मनोज चतुर्वेदी जी को एव समस्त टीम को

 **बहुत बहुत** 
शुभकामनाएं
अर्चना बाजपेई, सदस्य समाज सेवी संस्था





मेरे और मेरे परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अबसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक आदरणीय भाई मनोज चतुर्वेदी जी को एवं समस्त टीम को

 **बहुत बहुत** 
शुभकामनाएं

देवी सिंह, थाना प्रभारी, आरपीएफ, प्रयागराज



मेरे और मेरे परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अबसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक आदरणीय भाई मनोज चतुर्वेदी जी को एवं समस्त टीम को

 **बहुत बहुत** 
शुभकामनाएं

प्रदीप यादव, सदस्य मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी

दीदी माँ इंटरप्राइजेज की ओर से स्वतंत्रता दिवस की एवं हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के अबसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक आदरणीय बड़े भाई मनोज चतुर्वेदी जी को एवं समस्त टीम को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

सभी प्रकार की टॉफी के निर्माता

प्रो. रोहित, प्रो. हरशूल टिलवानी

श्रीकृष्णा वेड ब्रिज के पीछे, ग्वालटोली, नीमच, मध्यप्रदेश



भोपाल में शूट की जाएगी फिल्म ताऊ : निर्देशक सचिंद्र शर्मा

ब्लू अंब्रेला एंटरटेनमेंट की फिल्म ताऊ की शूटिंग भोपाल में होगी। अभी हाल ही में फिल्म निर्देशक सचिंद्र शर्मा ने भोपाल की कई लोकेशन देखी और उन्होंने कहा कि ताऊ की टीम जल्दी ही शक्ल व भोपाल आएगी। ताऊ एक क्राइम कॉमेडी फिल्म है। उन्होंने बताया भोपाल से जाने के बाद कलाकारों का चयन किया जाएगा।

संभावित कलाकार सौरभ शुक्ला, संजय मिश्रा, गोविंद नामदेव, शक्ति के यशपाल शर्मा, जाकिर हुसैन के अलावा एक रोमांटिक है जोड़ी होगी। भोपाल के शचीन्द्र श्रीवास्तव, अरुण वर्मा के अलावा और भी कलाकारों को मौका मिलेगा। भोपाल रंगमंच का गढ़ है और यहां की मिट्टी कलाकार उपजती है। भोपाल ने एक से एक कलाकार राइटर डायरेक्टर बॉलीवुड को दिए हैं। फिल्म से जुड़े अविराज का कहना है भोपाल शूटिंग फेंडली है और यहां के लोगों से बहुत उम्मीद है माय फेंड गणेशा शबनम मौसी जैसी कई फिल्म के राइटर सरचिंद्र शर्मा ने 40 के करीब फिल्मों लिखी है और मुंबई केन डांस साला लव यू फैमिली और बाला फिल्म का निर्देशन किया है। इस फिल्म के प्रोड्यूसर जितेंद्र चौरे हैं जो मध्य प्रदेश छिंदवाड़ा के रहने वाले हैं। इस फिल्म के मीडिया प्रभारी मनोज चतुर्वेदी ने उक्त जानकारी दी।



स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर सभी जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सभी जिलावासियों से अपील

1. वनों को किसी भी प्रकार से नुकसान नहीं पहुंचाये।
2. वृक्षों को नहीं काटे, वनों के जीवों को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाये।
3. वन जीवों को नुकसान नहीं पहुंचाये।
4. वृक्षों को काटना कानूनी अपराध है।
5. वन जीवों की हत्या, वन जीवों के साथ किसी भी प्रकार का वीर्य कार्य करना जिससे इनकी स्वतंत्रता और इनके जीवन को क्षति पहुंच सकती है के कार्य कानूनी अपराध में आता है।
6. वृक्षों को अधिक से अधिक लगाएं यह जीवन को जरूरी है।
7. कोरोना के इस आपदा में मास्क लगाएं, वैक्सीनेशन करवाये साथ ही सावधानी बनाये रखें। दो गज दूरी है जरूरी के नियम का पालन अवश्य करें।



अपीलकर्ता: ग्वालियर जिला वनमण्डलाधिकारी (डीएफओ) आईएफएस

15 अगस्त के सुअवसर पर नगर वासियों को

बहुत बहुत शुभकामनाएं



ममता राठी माध्यमिक शिक्षक शासकीय हाई स्कूल क्रमांक -२ डबरा
एवं प्रांतीय उपाध्यक्ष मध्यप्रदेश शिक्षक संघ

75वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर समस्त देशवासियों को

बहुत बहुत शुभकामनाएं



प्रशांत सोनी, डबरा

मानसून के मौसम में स्टाइल

• मिताली जैन

मानसून का मौसम आते ही मन गुदगुदाने लगता है। बारिश की बूंदें आपके मन को भी सराबोर कर देती हैं और हम ढेर सारी मस्ती करना चाहते हैं। लेकिन इस मौसम में स्टाइल को लेकर अधिक सतर्क होना पड़ता है। अगर आप अपने कपड़ों के सलेक्शन व उसे स्टाइल करने को लेकर लापरवाही बरतती हैं तो इससे आपका लुक तो बिगड़ता है ही, साथ ही इससे आपको कई तरह की अन्य परेशानियों को भी उठाना पड़ता है। तो चलिए आज हम आपको मानसून के मौसम में खुद को स्टाइल करने के आईडियाज के बारे में बता रहे हैं-

पहनें ब्राइट कलर्स

फैशन एक्सपर्ट कहते हैं कि इन दिनों हमारा मूड काफी अच्छा होता है और ऐसे में पॉजिटिविटी कपड़ों से भी झलकनी चाहिए। इसलिए, बेहतर होगा कि आप अपने मानसून वार्डरोब में ब्राइट कलर्स को प्राथमिकता दें। ब्राइट कलर्स देखकर मन को काफी अच्छा लगता है और यह आपके लुक में चार-चांद लगाते हैं। इस मौसम में आप बेहद लाइट या डार्क कलर्स जैसे व्हाइट या ब्लैक की जगह येलो, पिंक, ग्रीन व ब्लू आदि को सलेक्ट करें।



कैरी करें मानसून एसेसरीज

चूंकि मौसम बारिश का है तो ऐसे में आप खुद को स्टाइल करते समय मानसून एसेसरीज को कैरी करना कैसे भूल सकते हैं। मसलन, अगर आप बाहर जा रहे हैं तो आप अपने साथ प्रिंटेड कलरफुल छाता रख सकती हैं। इसी तरह, आप खुद को स्टाइल करते समय सैंडल्स या हील्स की जगह रबर फ्लॉप फ्लॉप पहनें।

स्मार्टली पहनें कपड़े

फैशन एक्सपर्ट्स के अनुसार, इस मौसम में खुद को स्टाइल करते समय आपको थोड़ी स्मार्टनेस दिखानी होती है, ताकि आप स्टाइलिश व कंपर्टेबल रहें। उदाहरण के तौर पर, सबसे पहले तो आपको फैब्रिक को लेकर अधिक सतर्क होना होगा। आप इस मौसम में डेनिम या सिल्क आदि पहनने से बचें। इसके अलावा, आप जिस भी आउटफिट को पहनें, उसकी लेंथ पर भी फोकस करें। मसलन, अगर आप मैक्सी ड्रेस पहन रही हैं तो फ्लोर लेंथ मैक्सी ड्रेस पहनने के स्थान पर आप टी-लेंथ मैक्सी ड्रेस पहनें या फिर आप मिडी भी पहन सकती हैं। इसी तरह आप जींस की जगह शॉर्ट्स को प्राथमिकता दें। आप नी-लेंथ स्कर्ट्स, हाफ जंपसूट्स, कैपरीज व शॉर्ट डेसेस आदि पहनकर अपने लुक को स्टाइलिश बना सकती हैं। इससे बारिश में कीचड़ हो जाने के बाद आपको परेशानी नहीं होगी।

एसेसरीज भी हो खास

फैशन एक्सपर्ट के अनुसार, मानसून में कपड़ों के साथ-साथ एसेसरीज पर भी ध्यान दिया जाना बेहद आवश्यक है। आप इस मौसम में बोडेड नेकलेस, खूबसूरत ब्रेसलेट, वाटरप्रूफ वॉच व वाटरप्रूफ बैग्स की मदद से अपने स्टाइल को एन्हेंस कर सकती हैं।

स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर सभी जिलेवासियों को

हादिक शुभकामनाएं



सभी जिलावासियों से अपील

1. वनों को किसी भी प्रकार से नुकसान नही पहुंचाये।
2. वृक्षों को नही काटे, वनों के जीवों को किसी भी प्रकार का नुकसान नही पहुंचाये।
3. वन जीवों को नुकसान नही पहुंचाये।
4. वृक्षों को काटना कानूनी अपराध है।
5. वन जीवों की हत्या, वन जीवों के साथ किसी भी प्रकार का वो कार्य करना जिससे इनकी स्वतंत्रता और इनके जीवन को क्षति पहुँच सकती है के कार्य कानूनी अपराध में आता है।
6. वृक्षों को अधिक से अधिक लगाएं यह जीवन को जरूरी है।
7. कोरोना के इस आपदा में मास्क लगाए, वैक्सीनेशन करवाये साथ ही सावधानी बनाये रखें। दो गज दूरी है जरूरी के नियम का पालन अवश्य करे।

अपीलकर्ता : अभिनव पल्लव

बालाघाट जिला वनमण्डलाधिकारी (डीएफओ) आई.एफ.एस

कंगना की फिल्म 'थलाइवी' 10 सितंबर को होगी रिलीज

को रोना वायरस के कारण लगे लॉकडाउन के कारण कई बॉलीवुड फिल्में रिलीज के लिए इंतजार कर रही हैं। अब जब कोरोना वायरस की दूसरी लहर की पकड़ कमजोर हो रही है तो सिनेमाघरों को सरकार ने खोल दिया है। अब सिनेमाघरों पर पहली बड़ी फिल्म अक्षय कुमार की बेल बॉटम रिलीज हुई है। फिल्म ने ज्यादा अच्छी कमाई नहीं की लेकिन फिल्म को काफी अच्छे रिव्यू मिले हैं। फिल्म दर्शकों को सिनेमाघर तक खिंचने में कामयाब रही। अब एक के बाद एक बड़ी फिल्मों सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। अक्षय के बाद अब कंगना रनौत सिनेमाघरों में अपनी फिल्म लेकर आ रही हैं। एएल विजय द्वारा निर्देशित कंगना रनौत और अरविंद स्वामी की आगामी फिल्म थलाइवी 11 सितंबर को सिनेमाघरों में उतरेगी। निर्माताओं ने एक नए पोस्टर के साथ फिल्म की नई रिलीज की तारीख की घोषणा की। कोरोनावायरस महामारी के कारण फिल्म की रिलीज को दो बार स्थगित किया गया था। थलाइवी तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जे जयललिता के जीवन पर आधारित आधिकारिक बायोपिक है।

थलाइवी पहले 23 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी। हालांकि, कोरोनावायरस महामारी की दूसरी लहर के कारण फिल्म को स्थगित करना पड़ा। थलाइवी की शूटिंग 2020 में पूरी हो गई थी, लेकिन मेकर्स फिल्म को रिलीज करने के लिए सही समय का इंतजार कर रहे थे। थलाइवी के प्रोडक्शन हाउस में से



एक, विब्री मीडिया ने एक नए पोस्टर के साथ फिल्म की रिलीज की तारीख की घोषणा करने के लिए ट्विटर का सहारा लिया। पोस्ट के मुताबिक, थलाइवी लंबे इंतजार के बाद 10 सितंबर को बड़े पर्दे पर रिलीज होगी।

थरूर को सलमान की फिल्म में ऑफर हुआ था किरदार

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान इन दिनों रूस में फिल्म टाइगर 3 का शूट कर रहे हैं। मनीष शर्मा निर्देशित फिल्म में सलमान एक बार फिर कटरीना कैफ के साथ एक्शन और रोमांस करते नजर आएंगे। वैसे क्या आप जानते हैं कि सलमान खान की एक फिल्म में कांग्रेस नेता शशि थरूर को किरदार ऑफर किया गया था?

विदेश मंत्री का किरदार

दरअसल 2018 में एक इंटरव्यू के दौरान शशि थरूर ने इसका जिक्र किया था। थरूर ने कहा था, 'एक बेहद दिलचस्प ऑफर मुझे मिला था, जो सलमान खान की एक फिल्म में एक किरदार था। फिल्म का निर्देशन भी एक बड़े डायरेक्टर कर रहे थे। फिल्म में भारत के विदेश मंत्री का एक किरदार मुझे ऑफर हुआ था।'

दोस्त की सलाह पर किया इनकार

शशि थरूर ने इंटरव्यू में आगे कहा था, 'इस रोल के ऑफर के बारे में सुनकर मुझे एक दोस्त ने कहा था- अगर तुम विदेश मंत्री बनना चाहते हो तो फिल्म में विदेश मंत्री का किरदार नहीं निभाना। इसके बाद मैंने किरदार के लिए मना कर दिया।'



सलमान के प्रोजेक्ट्स

गौरतलब है कि बिग बॉस ओटीटी के खत्म होने के बाद बिग बॉस 15 टीवी पर शुरू होगा, जिसे सलमान खान होस्ट करेंगे। वहीं बिग बॉस के अलावा सलमान खान फिल्म टाइगर 3 के शूट में बिजी हैं। टाइगर 3 के अलावा सलमान के खाले में किंक 2, अंतिम द फाइनल टुथ और भाईजान भी शामिल हैं।

शिल्पा ने डांस शो पर किया कुछ ऐसा कारनामा...



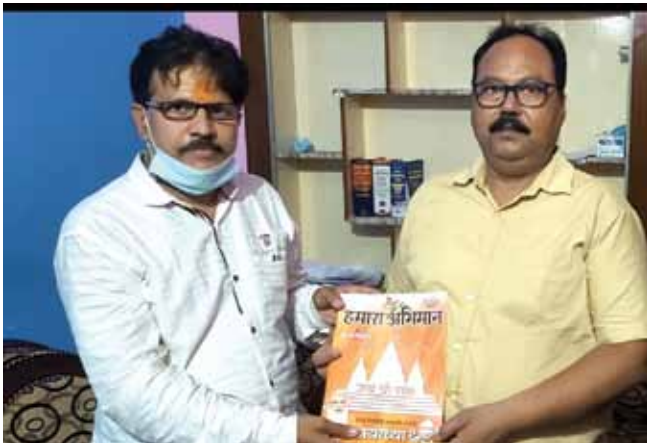
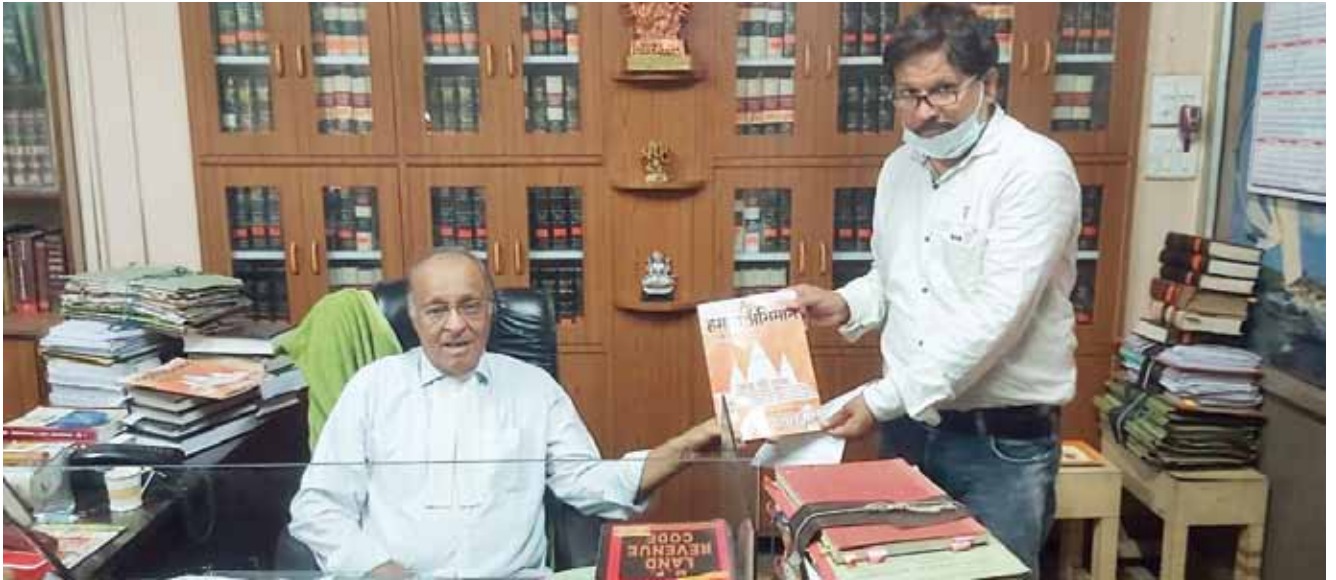
बॉ लीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी बीते दिनों से पति राज कुंद्रा से जुड़े केस को लेकर जबरदस्त सुर्खियों में रही हैं। अब वो काम पर वापस लौट आई हैं और सोशल मीडिया पर भी एक्टिव हो गई हैं। वहीं, इस बीच सोशल मीडिया पर उनकी कई फोटोज और वीडियोज भी वायरल हो रही हैं। हाल ही में शिल्पा का एक वीडियो सामने आया है, जिसे देखकर उनके फैंस क्रेजी हुए जा रहे हैं। वीडियो में शिल्पा के साथ फराह खान, गीता कपूर और फराह खान भी दिखाई दे रही हैं।

फराह खान ने शेयर किया वीडियो

दरअसल, फराह खान ने अपने इंस्टाग्राम एकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। ये वीडियो 'डांस शो 'सुपर डांसर' का है, जिसमें शो की पूरी टीम एक साथ जबरदस्त परफॉर्मेंस देती दिखाई दे रही है। वीडियो में फराह खान, ऋत्विक् धनजानी समेत कई लोग दिखाई दे रहे हैं। इस वीडियो में शिल्पा रेड कलर की ड्रेस में नजर आ रही हैं। वहीं, फराह खान ने नीले रंग की एक ड्रेस पहनी हुई है। इस वीडियो में सभी बेहद फनी अंदाज में डांस करते दिख रहे हैं।

लोगों ने किए ऐसे कमेंट्स

इस वीडियो को शेयर करते हुए फराह खान ने कुछ खास तो नहीं लिखा लेकिन #friendsreunion हैशटैग के जरिए बताया है कि दोस्तों संग री-यूनिन किंस कदर मस्तीभरा होता है। इस वीडियो पर फैंस की ताबड़तोड़ प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। कई लोगों ने शिल्पा के सपोर्ट में कमेंट किया है। कई लोगों ने कमेंट करते हुए लिखा- 'नजर ना लगे'।





मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश



मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश



मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश



प्रशासक प्रदीप शर्मा (एसडीएम)
डबरा नगर पालिका एवं डबरा



कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर



महेश पुरोहित
सीएमओ डबरा नगर पालिका

नगर पालिका डबरा द्वारा 75वें स्वतंत्रता दिवस के

पावन अवसर पर समस्त नगरवासियों का

हार्दिक अभिनंदन

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।

3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।

4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

